रजि. नं. पी.बी./जे.एल-/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

10 मार्च व 17 मार्च 2013

मूल्य : 10 रु.

वर्ष: 69	अंक: 50-51
सृष्टि संवत् 1960853113	
10 व 17 मार्च 2013	
दयानन्दब्द 189	
वार्षिक : 100 रू.	
आजीवन : 1000 रू.	
दूरभाष : 2292926, 5062726	

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व विशेषांक

आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

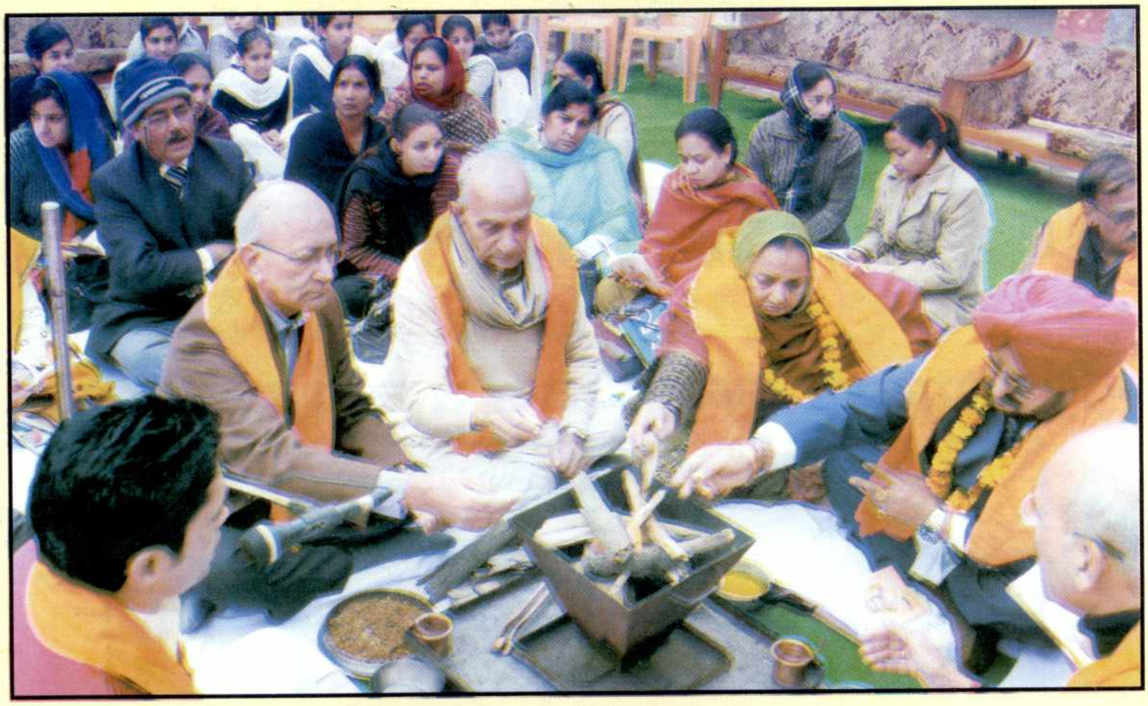

आर्य समाज घासमंडी नवांशहर के वार्षिक उत्सव पर हवन यज्ञ करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री एवं आर्यसमाज नवांशहर के प्रधान श्री प्रेम भारद्वाज जी, सभामंत्री श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, श्री विनोद भारद्वाज जी एवं अन्य।

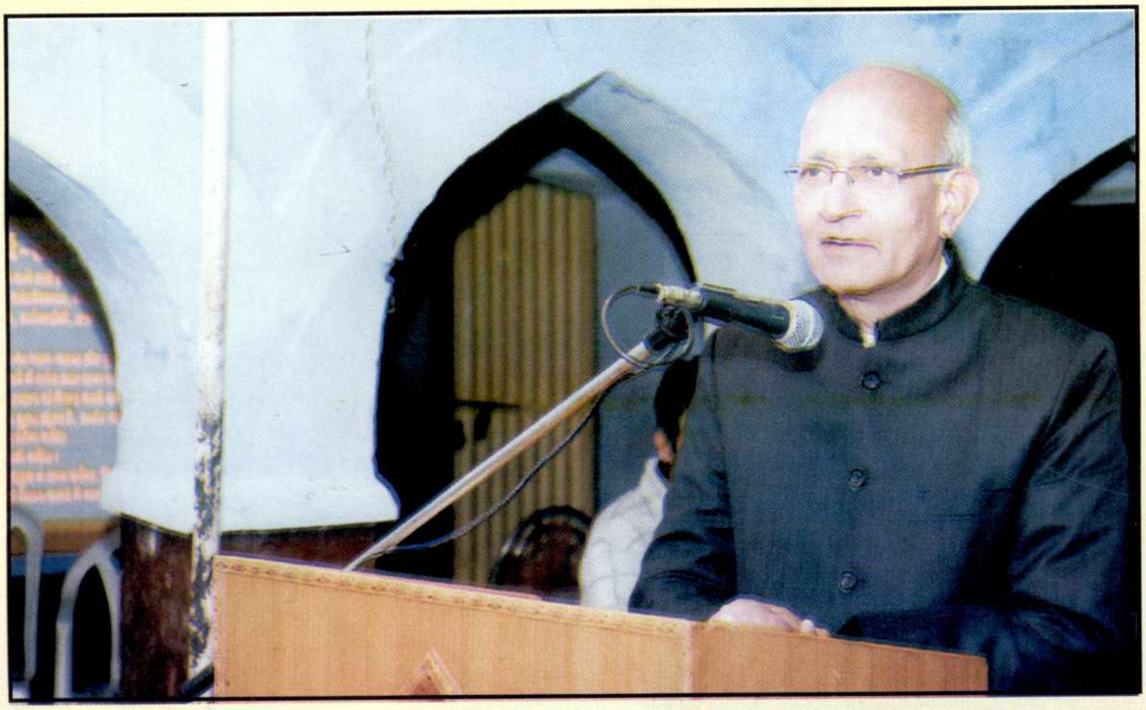

आर्य समाज घास मंडी नवांशहर के वार्षिक उत्सव पर पधारी हुई जनता को सम्बोधित करते हुये श्री प्रेम भारद्वाज जी सभामहामंत्री एवं प्रधान आर्य समाज।

अडिग सत्यव्रती दयानन्द

ले०—श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से हमें अनेकों शिक्षाएं प्राप्त होती हैं। उस महामानव का जीवन एक ज्योति पुंज के समान है जो अपने चारों ओर ज्ञान प्रकाश की किरणें बिखेरता हुआ जन मानस को आलोकित कर रहा है। जब जब जिस जिस ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जीवन को ध्यान से देखा वह उनका होकर रह गया। स्वामी जी का प्रत्येक ग्रंथ ज्ञान का भंडार है। केवल सत्यार्थ प्रकाश ही को अगर हम लेते हैं तो हमें पता चलता है कि उन्होंने इस ग्रंथ का नाम भी बड़ा चुन कर रखा है। महर्षि सारे संसार में सत्य का प्रकाश करना चाहते थे। इसलिये उन्होंने इस ग्रंथ में प्रत्येक मत, सम्प्रदाय, प्रत्येक रूढ़िवाद, अंधविश्वास, आडम्बरवाद का खुलासा खोल कर बताया कि इन मतों व सम्प्रदायों में कितनी सत्यता है। उन सब मतों के ग्रंथों को पढ़ना और उनमें लिखी बातों का सत्य-असत्य का निर्णय करना यह महर्षि की बुद्धि का ही चमत्कार था। जो बातें उन्होंने पुराणों के बारे में लिखी वह सब शत प्रतिशत ठीक निकली। उनकी किसी भी बात को आज तक कोई मत वाला झुठला नहीं सका। यह उनका गहन अध्ययन समझें या उनकी विशाल बुद्धि का प्रभाव।

महर्षि दयानन्द से पूर्व इन सम्प्रदायों व महजबों के ग्रंथों पर किसी ने भी टिप्पणी नहीं की थी, न ही साम्प्रदायिक लोग अपने ग्रंथों को ध्यान से पढ़ते थे, इस कारण उन्हें भी यह पता नहीं था कि हमारे ग्रंथों में ऐसी ऐसी अनर्गल बातें लिखी हुई हैं। महर्षि जी के लिखने पर उन्होंने अपने ग्रंथों को ध्यान से पढ़ा और उनमें इन त्रुटियों को पाया जिसकी ओर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इशारा किया था। कई मजहबों के लोगों ने अपने ग्रंथों को देख कर उनमें सुधार किया और कइयों ने उनके अर्थों में परिवर्तन किया। सत्य तो सत्य है उसे कौन झुठला सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जब उपदेश देते थे तो कई बार किसी मत की बुराइयों व त्रुटियों पर बोलते थे। एक बार बरेली में जब वह पुराणों की आलोचना कर रहे थे तो पादरी स्काट, कलैक्टर और कमिश्नर आदि इस आलोचना को सुन कर बहुत हंस रहे थे परन्तु थोड़ी देर में स्वामी जी महाराज ने ईसाई मत पर कड़ा भाषण दिया। यह सुन कर कमिश्नर क्रोधित हो उठे परन्तु उनकी इतनी हिम्मत नहीं हुई कि वह स्वामी जी से ऐसा न करने के लिये उन्हें कहें। दूसरे दिन कमिश्नर महोदय ने लक्ष्मी नारायण जी से कहा कि स्वामी जी से कह दीजिए कि ऐसा कठोर खंडन न किया करें इससे लोग उत्तेजित हो उठेंगे और उनके व्याख्यान बंद हो जाएंगे।

अब यह बात स्वामी जी के पास कौन पहुंचाए। लक्ष्मी नारायण कई साथियों के साथ स्वामी जी के पास पहुंचे परन्तु केवल इतना ही कहने का साहस जुटा सके कि स्वामी जी यदि आप नरमी से काम ले तो बहुत अच्छा रहेगा। इससे जनता पर प्रभाव भी अच्छा पडेगा और अंग्रेज भी प्रसन्न रहेंगे। यह सुन कर स्वामी जी हंस पड़े और कहने लगे इतनी बात के कहने में आप परेशान हो रहे हैं और इतना समय नष्ट कर दिया है। कमिश्नर ने कहा होगा कि आप का पंडित खंडन करता है उसके व्याख्यान बंद हो जाएंगे। तुम इतनी बात कहने में क्यों झिझक रहे थे। बीच में एक व्यक्ति बोल उठा स्वामी जी आप्त पुरुष हैं यह मन की बात जान लेते हैं। अगले दिन भवन जनता से खचाखच भरा हुआ था। उस समय स्वामी जी ने आत्मा के गुणों का वर्णन करते हुये सत्य कहना आरम्भ किया। लोग कहते हैं कि सत्य का प्रकाश न कीजिए क्योंकि कलेक्टर क्रोधित हो जायेगा, कमिश्नर प्रसन्न नहीं रहेगा, गवर्नर पीड़ा पहुंचाएगा। अजी चाहे चक्रवर्ती राजा भी अप्रसन्न क्यों न हो जाए हम तो सत्य ही कहेंगे। सभी अंग्रेज अफसर इस बात को सुन कर अपना सिर झुकाए बैठे रहे। परन्तु किसी को भी कुछ भी कहने का साहस नहीं हुआ।

स्वामी जी एक अडिग सत्यव्रती थे जो उन्होंने अपने मन में करने की ठान ली और जिसे वह सत्य मानते थे फिर उसे करने से उन्हें कोई रोक नहीं सकता था। वह अपना घर सत्य को जानने के लिये छोड़ कर आये थे। शिव मंदिर में जो देखा वह सत्य है या असत्य। सच्चा शिव तो संसार के कण कण में विद्यमान हैं। उन्होंने बहन और चाचा की मृत्यु को देख कर मृत्यु के सम्बन्ध में सत्यता जानने का प्रयास किया और उन्होंने मृत्यु की सच्चाई को जान लिया।

आज महर्षि का बोध पर्व मनाते हुये हमें भी यह विचार करना चाहिये कि हमने अपने जीवन में सत्यता को कहां तक स्थान दिया। क्या हम उनके बताये सत्य मार्ग पर ठीक से चल रहे हैं। कहीं हम सत्य को छोड़ कर असत्य का पक्ष तो नहीं ले रहे। सत्य पुरुषों, श्रेष्ठ पुरुषों की अवहेलना तो नहीं कर रहे हैं।

बोध पर्व की रात

ले०—श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

एक 14 वर्ष का बालक मूलशंकर सन् 1838 में आई शिवरात्रि की रात को इसलिये जागा था क्योंकि उसके मन में उस रात्रि में शिव के दर्शन करने की अभिलाषा थी। शिवरात्रि का संदेश देने वाले पुजारी, व्रत रखने की प्रेरणा देने वाले पिता श्री कर्षन तिवारी जी तथा मंदिर में उपस्थित सभी शिव भक्त लोग सो रहे थे परन्तु मूल शंकर अकेला जागता रहा। मूल का यह जागरण तब रंग लाया जब उसने शिव पिण्डी पर चूहों को उछल कूद करते देखा और भक्तों का चढ़ाया हुआ भोग खाते देखा। मूल शंकर के हृदय में एक विशेष प्रकार की ज्योति जगी जिसने उसे यह सोचने पर विवश कर दिया कि क्या यह सच्चा शिव है? पुजारी को जगाना चाहा परन्तु वह तो गहरी निन्द्रा में लीन था, उठा ही नहीं। पिता को जगाया और पूछा कि पिता जी क्या यही सच्चा शिव है? जिस पर वह चूहे उछल कूद कर रहे हैं। पिता ने कहा कि बेटे यह तो उसकी मूर्ति है। असली शिव तो कैलाश पर्वत पर रहता है लेकिन पिता के उत्तर से बालक मूलशंकर संतुष्ट नहीं हुआ। मूलशंकर शिव मंदिर से उठ कर घर चला गया और माता जी से लेकर भोजन किया परन्तु मूल शंकर के पिता श्री कर्षन जी तिवारी वहीं सोते रहे। मूलशंकर इस घटना के बाद कभी चैन की नींद नहीं हो सका। वह उस रात ऐसा जागा कि फिर जीवन भर जागता ही रहा और लोगों को जगाता रहा। इस रात्रि ने संसार को दयानन्द जैसा चिन्तक, विचारक दिया जिसने यह सिद्ध कर दिखाया कि मूर्ति जड़ होती है और इस मूर्ति पूजा से भारत का बहुत बड़ा अहित हुआ है। उसने परमात्मा की सर्वव्यापकता सिद्ध करके उसका सच्चा स्वरूप संसार के लोगों के सामने रखा और बताया कि वेद में स्पष्ट कहा गया है कि न तस्य प्रतिमा अस्ति अर्थात उसकी कोई प्रतिमा नहीं बन सकती। वह नस नाडियों के बंधन से बाहर है। उसको आंखों से नहीं देखा जा सकता। उसे जानने के लिये मन की आंखें खोलनी होंगी उसे सिर्फ और सिर्फ अनुभव किया जा सकता है।

ऋषि दयानन्द को बोध होने से पहले न जाने कितनी शिवरात्रियां संसार में व्यतीत हो चुकी थी, न जाने कितने भक्तों ने व्रतों के अनुष्ठानों को किया था किन्तु किसी के भी मन में शिव की पिण्डी पर चढ़ते चूहों को देखकर विवेक उत्पन्न नहीं हुआ। यह तो दयानन्द की ही विलक्षण बुद्धि थी जिसने उन्हें सोचने पर मजबूर कर दिया। सच्चे शिव की खोज में माता पिता को छोड़ दिया, धन वैभव को छोड़ दिया, जिसकी वजह से मूलशंकर को सच्चाई जानने के लिये स्थान स्थान पर भटकने के लिये मजबूर कर दिया और फिर भटक कर सच्चे शिव को प्राप्त किया। और फिर बालक मूलशंकर से स्वामी दयानन्द सरस्वती बन गये।

आज सारे संसार में आर्य समाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम है। हजारों आर्य समाजें, हजारों स्कूल, कालेज व गुरुकुल महर्षि का संदेश जन जन तक पहुंचाने में लगे हुये हैं। परन्तु यह एक विचारणीय बात है कि क्या हम में भी वह जागृति आई है जो महर्षि दयानन्द सरस्वती में थी? महर्षि ने जहां कहीं भी बुराई देखी चाहे वह अपनों में थी या दूसरों में थी उन्होंने उसके विरूद्ध अपनी आवाज बुलन्द की। उन्होंने उस समय राजा-महाराजाओं को भी नहीं छोड़ा। वह सत्य कहने का साहस रखते थे और जीवन भर सत्य के मार्ग पर चलते रहे। भले ही इसके लिये उन्हें 17 बार जहर पीना पड़ा और अन्त में मृत्यु का आलिंगन करना पड़ा। महर्षि दयानन्द ने समाज में फैली सभी बुराई को दूर करने का प्रयास किया। वह मूर्तिपूजा के कट्टर विरोधी थे। जात-पात, छूआछूत और आडम्बरों के प्रबल विरोधी थे। वह सारे संसार के लोगों को एक सूत्र में बांधना चाहते थे। अपने थोड़े से जीवनकाल में उन्होंने बहुत कुछ करके दिखा दिया और वह अपना अमर संदेश देकर 30 अक्तूबर 1883 को संसार से चले गये। उसके बाद आर्य समाज ने और आर्य बन्धुओं ने बहुत कार्य किया इसमें कोई संदेह नहीं।

महर्षि दयानन्द तो जीवन भर जागते रहे थे परन्तु प्रत्येक आर्य बन्धु को शिवरात्रि के दिन ऋषि बोध के दिन यह व्रत लेना होगा कि हम भी उन्हीं की तरह जीवन भर जागते रहेंगे। देश की आज की वर्तमान परिस्थितियों में प्रत्येक आर्य बन्धु को जागते रहना चाहिये। जागरूक रहना चाहिये। अपने आसपास देखते रहना चाहिये कि क्या हो रहा है ? आर्य समाज देश का चौकीदार है। जैसे चौकीदार अपने कर्त्तव्य को निभाता हुआ स्वयं भी जागता रहता है और दूसरों को भी जगाता रहता है। आज फिर पहले की तरह पाप और पाखंड बढ़ रहा है और इस पाप और पाखंड का नाश तभी संभव है जब हम जागते रहेंगे। न हम स्वयं पथ से भटकेंगे और न ही अपने पडोसियों को भटकने देंगे। आओ आज फिर शिवरात्रि पर स्वामी दयानन्द जी के अधूरे पड़े कार्यों को पूरा करने का संकल्प लें।

हमें कब बोध होगा ?

ले०—श्री अशोक पुरुथी एडवोकेट रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब

ओ३म नमः शम्भवाय च मयोभवाय च।
नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

अर्थात संसार का कल्याण करने वाले प्रभु को हम नमन करते हैं जिसका स्वभाव ही सभी प्राणियों को सुख देना है और दुखों से त्राण करना है। ऐसे प्रभु को हमारा नमन है। वह प्रभु फल, फूल, अन्न, जल, वायु, अग्नि, सूर्य और औषधियों द्वारा सब प्राणियों का कल्याण कर रहा है, वह शिव है। शिव का अर्थ होता है कल्याणकारी। संसार में सबसे अधिक कल्याणकारी परमात्मा है इसलिये परमात्मा का भी एक नाम शिव है। क्योंकि वह इस संसार का रचयिता है, पालन पोषण करने वाला है और रक्षा करने वाला है परन्तु सन् 1838 की फाल्गुण वदी चौदस की रात्रि जिसे चिरकाल से शिवरात्रि कहा जाता था। महर्षि दयानन्द भी इस दिन जाग कर शिव बन गये और अपना सारा जीवन मानव मात्र के कल्याण के लिये लगा दिया।

प्रति वर्ष शिवरात्रि के पर्व को हम बोध पर्व के रूप में मनाते हैं। मूल शंकर को चूहों को मूर्ति पर चढ़ते देख कर बोध हो गया कि यह मूर्ति शिव नहीं है। बोध उसी आत्मा को होता है जो सजग होती है। जागृत होती है। क्योंकि सो रही आत्मा को जगाना कठिन है। राजकुमार सिद्धार्थ ने बूढ़े व्यक्ति को पहली बार राजपथ पर चलते देखा था। उसके बाद कुछ लोगों द्वारा ले जा रहे एक शव को देखा था। इन दोनों घटनाओं ने उन्हें बुढ़ापे व मृत्यु से छुटकारा पाने के लिये घर छोड़ने पर विवश कर दिया था और वह राजकुमार सिद्धार्थ से महात्मा बुद्ध बन गये थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपनी बहन और चाचा की मृत्यु को देखा था। वह मृत्युंञ्जय बनने के लिये मृत्यु के रहस्य को जानने के लिये परमात्मा के स्वरूप को जानने के लिये घर से निकल पडे थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती एक मात्र ऐसे महापुरुष हुये जिन्होंने समाज सुधार के क्षेत्र में ऐसे मील के पत्थर स्थापित किये हैं जिनके मार्ग दर्शन में आज भी हम सब प्रकार के सुधारों की आधारशिला रख सकते है। यह ठीक है कि आज भी महर्षि जी के सार्वभौमिक सत्यों का आंकलन सही ढंग से नहीं हो पाया है मगर अन्ततः समूची मानवता उन शाश्वत सूत्रों पर चल कर ही सुख और शान्ति प्राप्त कर सकती है। स्वामी जी ने विश्व बन्धुत्व की दिशा में भी महत्वपूर्ण नियम हमारे सामने रखे हैं। वह महान सत्यवादी थे। उनका जीवन सत्य से प्रारम्भ हुआ और सम्पूर्ण जीवन सत्य के पक्ष में ही संघर्ष करते रहे और सत्य के लिये ही उन्होंने अपने जीवन को बलिवेदी पर अर्पित कर दिया। उनके जीवन से हमें कई प्रेरणाएं मिलती हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बोध प्राप्त कर लिया परन्तु हमें बोध कब होगा इस पर हमें आज गम्भीरता से चिन्तन करना चाहिये। महर्षि की विचारधारा हमें अच्छी लगी, उनके ग्रंथों को पढ़ने के बाद हम आर्य समाज से जुड़े जो उनके द्वारा स्थापित की गई है। हम प्रति वर्ष बड़े समारोह पूर्वक ऋषि का बोध पर्व भी मनाते हैं। हमें न कोई बोध प्राप्त हो रहा है और न ही हम अच्छी प्रकार महर्षि के सिद्धान्तों को अपना रहे हैं। आज हमारे देश में महर्षि दयानन्द के समय से भी अधिक पाखंड बढ़ गया है। भ्रष्टाचार और आतंकवाद बढ़ गया है। स्त्री पहले से ज्यादा शिक्षित हो गई है परन्तु उसकी स्थिति फिर बिगड़ती जा रही है। दहेज के नाम पर आज भी उसे जलाया जा रहा है। छोटी छोटी बच्चियों से बलात्कार किये जा रहे हैं। दिल्ली में पिछले दिनों जो हुआ वह हम सभी जानते हैं। क्या महर्षि दयानन्द यही स्त्री जाति का उत्थान देखना चाहते थे ? जो आज हमें देखना पड़ रहा है।

आर्य समाज कहां खड़ा है ? क्या कर रहा है ? उसे क्या करना चाहिये ? यह प्रश्न आज हमारे सामने आ रहे हैं। हम बोध पर्व मनाते हुये इन प्रश्नों पर विचार करें। हम विचार करें कि हमें कब बोध होगा ? जब हम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बताए हुये मार्ग पर चल कर उन्हीं की तरह समाज कल्याण का कार्य करेंगे। यह बोध पर्व हमें आज फिर आत्म निरीक्षण करने के लिये प्रेरित कर रहा है। आओ बोध पर्व को मनाते हुये आत्म निरीक्षण करें।

सोने वालो जाग उठो

ले०—श्री सुधीर शर्मा, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

शिवरात्रि एक ऐसा पर्व है जिसे सब हिन्दू अपने अपने ढंग से मनाते हैं। इसका विशेष महत्व यह है कि उस दिन शिव की पूजा होती है। दूसरे शब्दों में परमेश्वर का जाप करते हैं और उसके आशीर्वाद के लिये कामना करते हैं। जब मूल शंकर के पिता श्री कर्षण तिवारी जी ने उन्हें शिव मंदिर में ले जाकर पूजा करने के लिये बिठा दिया तो उस नन्हें से बालक को यह पता नहीं था कि यह सब कुछ क्या है? वह वहां बैठ कर सोचता रहा कि जो मूर्ति उस के सामने पड़ी है वह क्या है? वह बोल नहीं रही, हिल नहीं रही। बालक मूलशंकर इस प्रतीक्षा में वहां बैठे थे कि वह मूर्ति उन्हें कुछ संदेश देगी परन्तु वह बोली नहीं और इतने में वहां एक चूहा आया और उस मूर्ति पर पूजा करने वालों ने जो मिठाई चढ़ा रखी थी उस चूहे ने वह खानी आरम्भ कर दी। इस एक घटना ने मूलशंकर को वह संदेश दे दिया जिसकी प्रतीक्षा में वह वहां बैठा था और वह संदेश यही था कि जो सोवत है, सो खोवत है, जो जागत है वह पावत है। मूलशंकर सोये नहीं पर जागते रहे। जो कुछ उन्होंने वहां देखा उसने उनके मन और मस्तिष्क में एक क्रान्ति पैदा कर दी। वह सोचने लगे कि यदि यह वह शिव है जिसकी पूजा के लिये उनके पिता जी उन्हें यहां लाए थे, तो उस शिव ने उस चूहे को वहां से क्यों नहीं हटाया। क्या इसलिये कि वह पत्थर की एक बेजान मूर्ति हैं और असली शिव नहीं हैं? इस प्रकार के प्रश्न उनके मन मस्तिष्क में उठने लगे और वह बेचैन हो उठे और वास्तविक स्थिति को जानने के लिये उन्होंने अपना घर बार छोड़ दिया। जंगलों और पहाड़ों में भटकते भटकते वह अन्त में अपने गुरु और आचार्य दंडी स्वामी विरजानन्द जी के पास पहुंचे। गुरु विरजानन्द जी के चरणों में बैठ कर उन्होंने जो शिक्षा प्राप्त की उसने उनकी आंखें खोल दी और उन्हें पहली बार यह पता चला कि जिस मूर्ति की वह पूजा करते रहे हैं वह वास्तव में उस भगवान शिव की पूर्ति नही थी जिसे संसार के कर्त्ता धर्त्ता कहा जाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर यदि हम गम्भीरतापूर्वक विचार करें तो हम इसी परिणाम पर पहुंचेंगे कि जो कुछ उन्होंनें अपने जीवन में किया है वह केवल इसलिये हो सका क्योंकि वह उस रात जागते रहे। वह स्वयं एक रात जागे और फिर अपने देशवासियों को सदा जगाते ही रहे।

कार्य क्षेत्र में उतरते ही उन्होंने पाया कि भारतीय समाज को अति दीन, हीन व क्षीण अवस्था में जिस समाज को अनेक बीमारियां, रूढ़ियां तथा अन्धविश्वास दीमक की तरह खाए जा रहा है। इस समय को इन बुराइयों से छुटकारा दिलाना उस महामानव ने अपना प्रथम कर्त्तव्य समझते हुये पाखण्ड खंडिनी पताका लहरा कर अपना कार्य आरम्भ कर दिया। लोगों ने इन नवीन क्रान्तिकारी विचारों के संन्यासी को न समझा और उन्होंने अपनी धुन के धनी इस संन्यासी पर पत्थर बरसाए, लाठियां चलाई, सांप फैंके यहां तक कि अनेक बार उन्हें विष भी पिलाया परन्तु स्वामी दयानन्द किसी भी बाधा से घबराने के स्थान पर अपने विचारों पर अंड़े रहे और इसके लिये उन्होंने सर्वप्रथम भारत के अपने प्राचीन ईश्वरीय ज्ञान वेदों के ग्रंथों को खोज निकाला तथा एक जयघोष लगाया कि हे भारत के लोगों यदि तुम कल्याण चाहते हो तो वेदों की ओर लौटों। यही सत्य ज्ञान है, जिस पर चल कर तुम अपना कल्याण कर सकते हो और समस्त विश्व का कल्याण कर सकते हो।

इसी समय स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पाया कि देश में महिलाओं की हालत बहुत ही शोचनीय है। सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह तथा बहुविवाह प्रथा ने महिलाओं की हालत बहुत ही शोचनीय बना रखी है और ऊपर से उन्हें शिक्षा के अधिकार से वंचित कर रखा है। नारी की इस हालत को देख कर ऋषि दयानन्द रो दिये। उन्होंने अंधविश्वास, पर्दा प्रथा, बाल विवाह व बहु विवाह के विरुद्ध आवाज उठाई और नारी शिक्षा पर बल दिया तथा विधवा महिलाओं को पुनः विवाह का अधिकार देकर उनका उत्थान किया। (शेष पृष्ठ 7 पर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती का विश्व को अपूर्व योगदान

ले०—प्रो० स्वतन्त्र कुमार, कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

भारतवर्ष में ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी में जन्म लेकर जिन महापुरुषों ने राष्ट्र, समाज, सभ्यता, संस्कृति, धर्म, राजनीति तथा साहित्य की अपूर्व सेवा की, उनमें युगद्रष्टा तथा आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम बड़े आदर के साथ इतिहास के पृष्ठों में गृहीत किया जाता है। इनका जन्म सौराष्ट्र काठियावाड़ गुजरात मौरवी राज्य के अन्तर्गत टंकारा नामक ग्राम में १८२४ ई० (१८८१ विक्रमी) में पिता कर्षणजी तिवारी, सामवेदीय औदीच्य ब्राह्मण के घर हुआ। इनके पिता जी जमींदारी का कार्य मुख्य रूप से किया करते थे। बाल्यकाल में बालक का नाम मूलशंकर रखा गया, जिन्हें प्रेम से सभी मूलजी के नाम से पुकारा करते थे। १८८८ विक्रमी में बालक मूलजी का उपनयन संस्कार सम्पन्न कराया गया और तभी से उनके पिता ने उन्हें यजुर्वेदसंहिता कण्ठस्थ करानी प्रारम्भ की। लगभग छह वर्षो में इन्होंने उस संहिता को मूलरूप में याद कर लिया तथा मध्य-मध्य में अन्य वेदों के भी सहस्रों मन्त्र इन्हें कण्ठस्थ हो गये। संस्कृत व्याकरण के शब्द और धातुरूप आदि ग्रन्थों का भी इन्हें पारायण करा दिया गया।

मूलशंकर जी का जिस परिवार में जन्म हुआ, वह कट्टर शिवभक्त था। जब बालक किशोरावस्था में था, तब पिता की प्रेरणा में १८९४ विक्रमी माघ कृष्ण चतुर्दशी को इन्हें शिवरात्रि का व्रत रखने और रात्रि-जागरण का महत्त्व विशेष रूप से बताया गया। यद्यपि इस कार्य के लिये इनकी माता सहमत नहीं थी। पुनरपि पिता की इच्छा को देखते हुए बालक मूलशंकर ने शिवरात्रि का व्रत रखा। रात्रि के समय में जब सभी शिव के उपासक नींद लेने लगे और ऊंघने लगे, तब मूलशंकर ने बलपूर्वक पानी के छींटे मुख पर देकर अपनी नींद को दूर भगाया, जिससे रात्रि जागरण में और शिवव्रत में कोई बाधा उपस्थित न हो जाये, किन्तु इसी बीच इनके समक्ष एक विचित्र घटना घटती है। शिव पिण्डी के ऊपर कहीं से एक चूहे ने आकर प्रसाद तथा अन्य मिष्ठान्नादि खाना आरम्भ कर दिया। इस दृश्य को देखकर बालक मूलशंकर के मन में सहसा यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि पिता ने जिस भगवान् शंकर का इतना विशाल, शक्ति सम्पन्न, असुरसंहारक और दैदीप्यमान् स्वरूप बताया था, वह यह शिव तो अपने ऊपर चढ़े हुए इस चूहे को नहीं भगा पा रहा है। यह सोचकर उसी समय बालक घर लौट आया और कुछ खान-पान कर सो गया। शिवरात्रि के त्यौहार पर रात्रि में इस अघटित घटना ने बालक मूलशंकर के हृदय में मूर्तिपूजा के प्रति अविश्वास पैदा कर दिया। वह लोगों से पूछता रहा कि आखिर में भगवान् कहां है ? सभी ने एक ही उत्तर दिया कि वे कैलाश पर रहते हैं, उनकी प्रतिमा बनाकर हम यहाँ पूजते हैं। इस उत्तर को सुनकर बालक के मन में उस सच्चे शिव को खोजने की इच्छा उत्पन्न हो गयी। इसी जिज्ञासा की ऊहापोह में मूलशंकर के परिवार में दो घटनायें आश्चर्यकारक घटित हुई। प्रथम उनकी बहिन विषूचिका रोग से ग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो गयी तथा दूसरी उनके चाचा जी का देहावसान हो गया। इन दोनों घटनाओं से उन्होंने मृत्यु को अपने सामने से लोगों को ले जाते हुए देखा, जिन परिस्थितियों में प्राणी स्वयं को असहाय एवं बलहीन समझते हैं। ऐसी दोनों घटनाओं ने बालक के मन में संसार के प्रति वैराग्य की भावना तथा इसकी क्षणभंगुरता ज्ञात करायी। परिणामस्वरूप बालक का हृदय संसार के बन्धनों से मुक्त होने के लिये तथा सच्चे भगवान् शंकर को पाने के लिये निरन्तर छटपटाने लगा। बालक की इस प्रकार की परिस्थितियों को देखकर उनके माता-पिता ने उसका विवाह करने का निश्चय किया, जिससे यह संसार के बन्धनों में बंध जायेगा और विभिन्न प्रकार की

शंकाओं को भूल जायेगा। जब बालक मूलशंकर को यह आभास हुआ, तब उन्होंने घर से पलायन करने का विचार बना लिया। इसी उद्देश्य से १९०३ विक्रमी के ज्येष्ठ मास को सन्ध्या को बालक मूलशंकर छुपकर के अपने सगे-सम्बन्धियों, घर-परिवार, माता और पिता की ममता के बन्धनों को तोड़कर सच्चे शिव की खोज में और मृत्यु से छूटने के उपायों को ढूंढने के लिये निकल पड़ा। एक संन्यासी ने इनका नाम ब्रह्मचारी शुद्धचैतन्य रखा और ये अपने प्रश्नों के समाधान के लिये यत्र-तत्र घूमते रहे। एक बार सिद्धपुर के मेले में उनका अपने पिता से साक्षात्कार भी हुआ, जो उनको अपने घर लौटा लाने के लिये आये थे; किन्तु अपनी बुद्धिमत्ता से ये रात्रिकाल में अवसर पाकर वहाँ से भाग गये। उस समय के पश्चात् ब्रह्मचारी शुद्धचैतन्य का अपने सगे-सम्बन्धियों से फिर कभी मिलन नहीं हुआ। कुछ समय के उपरान्त ब्रह्मचारी शुद्धचैतन्य ने स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यासी-दीक्षा ग्रहण की; जिन्होंने इनका नाम दयानन्द सरस्वती रखा।

अपने प्रश्न सच्चे शिव की खोज तथा मृत्यु से बचने के उपाय को लेकर दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम भारतवर्ष का उत्तरभाग खोजना प्रारम्भ किया। उन्होंने सुना था कि हिमालय पर्वत की गुफाओं में सच्चे योगीजन योगसाधना में रत रहते हैं, जिन्हें परमेश्वर के दर्शन हो चुके हैं और वे मृत्यु पर विजय प्राप्त कर चुके हैं। इसी विचार से ये गुजरात के अनेक स्थानों का भ्रमण करते हुए आबू पर्वत पर पहुंचे, विभिन्न योगियों से योग की विद्या सीखी। वेदशास्त्रों के अनेक उपदेशों का श्रवण किया, तदुपरान्त भारतवर्ष के उत्तराञ्चल के वनपर्वतों में इन्होंने कुछ समय तक योगियों का अन्वेषण किया। यहाँ उन्हें पाखण्डी, द्रव्यलोलुप, साधुवेषधारी लोगों के तो दर्शन हुए, किन्तु परमेश्वर का दर्शन कराने वाला आध्यात्मिक चेतना से सम्पन्न कोई साधु इन्हें उपलब्ध नहीं हुआ। लम्बे काल तक साधु-संन्यासियों के दर्शन करते हुए इन्होंने गंगा के किनारे-किनारे देश का भ्रमण किया और अनेकों महन्त, महामण्डलेश्वर, तथा मन्दिर के पुजारियों से भी मिलते रहे, किन्तु उन्हें कोई इस प्रकार का संन्यासी उपलब्ध नहीं हुआ, जो उन्हें योगसाधना में निष्णात कर सके। अन्त में उन्हें योगविद्या का ज्ञान योगानन्द स्वामी; ज्वालानन्द पुरी, शिवानन्दगिरि, भवानीगिरि इत्यादि योगाभ्यासियों से प्राप्त हुआ।

फिर इन्हें किसी ने कहा कि आप व्याकरण शास्त्र का अध्ययन करो और इसके लिये इन्हें बताया कि मथुरा में एक दण्डी स्वामी प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द जी रहते हैं, जो व्याकरणशास्त्र के उद्भट्ट विद्वान् हैं। व्याकरण को पढ़ने की अभिलाषा से कार्तिक शुक्ला द्वितीय बुधवार १९१७ विक्रमी को दयानन्द सरस्वती प्रज्ञाचक्षु की कुटिया पर व्याकरण पढ़ने आये, जहाँ पर दण्डी जी के कठोर नियमों का पालन करते हुए ढ़ाई वर्षों के अन्तराल में इन्होंने व्याकरणशास्त्र का अध्ययन किया। यद्यपि दण्डीजी के सामने इन्हें वेदविद्या को पढ़ने का अवसर नहीं मिला, पुनरपि इन्हें गुरुवर विरजानन्द के साथ अनेक बार ज्ञानचर्चा तथा तर्क के माध्यम से यह ज्ञात हो चुका था कि आर्ष और अनार्ष किसे कहा जाता है। ऋषिकृत ग्रन्थ आर्ष हैं तथा मनुष्यकृत ग्रन्थ अनार्ष हैं। इन दोनों में बहुत अन्तर होता है। आर्षग्रन्थ सृष्टिविज्ञान के अनुसार अनुसरण करते हैं। वैदिक सिद्धान्त के परिपोषक हैं और अनार्षग्रन्थों में अनेक बार विरोधाभास, सृष्टिविरुद्ध प्रकरण भी उपलब्ध होते हैं। विद्यासमाप्ति के उपरान्त प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द ने गुरुदक्षिणा के रूप में इनसे आर्षग्रन्थों के प्रचार हेतु तथा वैदिकधर्म के उद्धार हेतु प्रतिज्ञा करायी। गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए इन्होंने वैदिकधर्म का शंखनाद किया और इस राष्ट्र को धर्मक्षेत्र बनाने के लिये अपने अनेक प्रयास प्रारम्भ कर दिये।

प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द सरस्वती से विद्याध्ययन करने के उपरान्त स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राष्ट्र को सुसंस्कारित तथा वेदों के प्रचार के माध्यम से उत्तम बनाने का अहर्निश प्रयास प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने देखा कि देश की पराधीनता के मुख्य कारण कुरीतियों का प्रचार, कुसंस्कारों में पड़ी हुई जनता तथा मिथ्याचार और विचार हैं। इस देश के नामधारी ब्राह्मणों ने ही इस देश को पराधीन करने का तथा क्षत्रियों ने व्यसनों में पड़कर अपनी सभ्यता और संस्कृति का विनाश किया है; जिस कारण ये पराधीन होते चले गये। इन सबके उद्धार के लिये स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १० अप्रैल १८७५ को बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की, जिसका प्रथम अधिवेशन चैत्र शुक्ला पंचमी १९३२ विक्रमी को डॉ० मानिकजी की वाटिका में, जो गिरगांव में स्थित है, वहां पर सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज के सदस्य न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानाडे, गोपालराव, हरिदेशमुख इत्यादि महामान्य सभासद बनाये गये। इसके बाद लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना हुई। आर्यसमाज पंजाब प्रान्त में बहुत शीघ्रता से दूर-दूर तक फैला। स्वामी

दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों को प्रचारित और प्रसारित करने में रायबहादुर मूलराज, लाला साईंदास, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, पं० लेखराम जैसे कर्मठ कार्यकर्त्ताओं का अभूतपूर्व योगदान रहा। सहस्त्रों लोग स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुयायी बन गये। न केवल साधारण जनता अपितु राजा तथा राजपुरुषों ने भी स्वामी जी महाराज से आर्यसमाज के सिद्धान्तों की दीक्षा लेकर अपने जीवन को धन्य मानना प्रारम्भ किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती को जब यह आभास हुआ कि केवल मात्र उपदेश तथा प्रचार से ही कार्य नहीं चलेगा; तदुपरान्त उन्होंने विभिन्न ग्रन्थों का लेखन कार्य प्रारम्भ किया। इस लेखनकार्य के अन्तर्गत उन्होंने यजुर्वेदभाष्य सम्पूर्ण, ऋग्वेद का भाष्य (७ मण्डल ६१ सूक्त २ तक), सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि, आर्येदेश्यरत्नमाला, आर्याभिविनय, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा भ्रान्तिनिवारण आदि अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया। इस अवधि में उन्होंने अनेक मतानुयायियों के विचारों को परिवर्तित करते हुए वैदिकधर्म में दीक्षित किया और अनेकों की शंकाओं का समाधान भी किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्राचीन आर्षग्रन्थों के प्रति अपूर्व आस्था रही। इसी उद्देश्य से उन्होंने संस्कृतभाषा पर बहुत जोर दिया और वेदों का पढ़ना-पढ़ाना सभी आर्यों का परम धर्म घोषित किया। संस्कृतभाषा के प्रचार और प्रसार के लिये उन्होंने अनेक संस्कृत पाठशालाओं की स्थापना भी अपने जीवनकाल में करवायी। जिस समय देश में अंग्रेजी, उर्दू तथा फारसी का बोलबाला था, केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे, जिन्होंने संस्कृतभाषा को सब भाषाओं का मूल घोषित किया तथा उस भाषा में लिखे हुए प्राचीन आर्षसाहित्य को तत्काल विद्यमान साहित्य से तुलना करते हुए; वैदिक साहित्य को सबका हितैषी तथा ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण घोषित किया। अपने व्याख्यानों में सम्भाषणों में, ग्रन्थरचना में, चिन्तन तथा जीवन में महर्षि ने संस्कृत को सर्वोत्तम ज्ञान और विज्ञान की कुंजी बताया। सामान्य जनों को संस्कृतभाषा सिखाने के लिये संस्कृतवाक्यप्रबोध नामक ग्रन्थ की रचना की।

भारतवर्ष का अतीत महत्त्वपूर्ण था, उसका कारण उन्होंने बताया कि इस देश की भाषा संस्कृत थी और यहाँ के निवासी उस एक ईश्वर में विश्वास रखते थे। इस देश की संस्कृति को रसातल तक पहुंचाने के लिये जो मुख्य कारण रहे, उनमें मूर्तिपूजा, आडम्बर तथा जातिवाद प्रमुख हैं। इसीलिये स्वामी जी ने मूर्तिपूजा को समाप्त करने के लिये अनेकों शास्त्रार्थ किये। काशीशास्त्रार्थ उनमें प्रमुख है, जहाँ उन्होंने अपार जनता के मध्य पण्डितों को ललकारते हुए कहा कि बताओ वेदों में कहाँ लिखा है कि मूर्तिपूजा वेदानुकूल है। सभी पण्डितों के साथ शास्त्रार्थ करते हुए अन्त में उन पण्डितों की पराजय हुई। इस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती वेद के प्रचार में निरन्तर अग्रसर रहे।

आज जब देश अपनी सभ्यता, संस्कृति, आचार-विचार, रहन-सहन, खान-पान, पूजा-पद्धति आदि का परित्याग करता जा रहा है और पाश्चात्य संस्कृति तथा जीवन-परम्परा इस पर हावी होती जा रही है, उस समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, जिन पर चलकर समाज तथा परिवार सुख और शान्ति की प्राप्ति कर सकता है। महाशिवरात्रि के इस अवसर पर हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम अज्ञान से छूटकर ज्ञान की ओर चले; अविद्या से छूटकर विद्या को ग्रहण करें और अन्धकार से छूटकर प्रकाश का मार्ग अपनायें।

पृष्ठ 4 का शेष- सोने वालो जाग.....

नारियों को शिक्षित करने के लिये सब प्रकार के विरोध के बावजूद भी कन्या पाठशालाएं आरम्भ की तथा महिलाओं को भी पुरुष के समान वेद पढ़ने का अधिकार देकर माता निर्माता भवति के अनुरूप कार्य किया। यह महर्षि के प्रयास का ही परिणाम था कि देश की जनता ने अपने उस अतीत की तरफ देखना शुरू कर दिया जिस पर हम आज भी गर्व कर सकते हैं।

शिवरात्रि के दिन हम इस बार भी ऋषि बोध उत्सव मनाएंगे परन्तु केवल महर्षि दयानन्द का गुणगान करने से हमारा कर्त्तव्य पूरा नहीं हो जाता। हमें सोचना चाहिये कि वह क्या करना चाहते थे और हमें वह क्या रास्ता दिखा गये हैं। यदि हम उनके संदेश को अब भी किसी प्रकार क्रियान्वित करने का प्रयास करें तो कुछ सीमा तक उनके ऋण से उऋण हो सकते हैं। इसलिये ऋषि बोध उत्सव के दिन हम केवल उत्सव मना कर ही संतोष न करें अपितु हमें उनके इस संदेश को कभी नहीं भुलाना चाहिये कि उतिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान निबोधत् अर्थात उठो और जागो तथा अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये कटिबद्ध हो जाओ।

सच्चे शिव के उपासक–महर्षि दयानन्द

ले०–श्री रणजीत आर्य मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

धन्य है आत्म बोध का पर्व धन्य है आत्म ज्योति प्रसार।
कि जिसने किया युगों के बाद अचानक आलोकित संसार।।

संसार के काल की अबाध गति के चक्र में न जाने कितनी शिवरात्रियां आई हैं और भविष्य में भी आती रहेंगी, कितने वृद्ध कंकालों को मानव देखते ही रहते हैं, पर संसार से विरक्त नहीं होते। जो महात्मा बुद्ध जैसी पवित्रात्माएं होती हैं उन पर तो ऐसी घटनाओं का चमत्कारी प्रभाव अवश्य होता है। ठीक इसी भान्ति शिवरात्रि पर्व पर कितने आस्तिकों ने पूजा की होगी, कितनों ने मूलशंकर की भान्ति घटनाओं को देखा होगा परन्तु जो अलौकिक प्रभाव बालक मूलशंकर के पवित्र और निर्मल मन पर पड़ा जिसके प्रभाववश धन धान्य से सम्पन्न परिवार का त्याग, सच्चे शिव की खोज में बीहड़ जंगलों में विचरण, पर्वतों की कंदराओं में योगियों की तलाश, भूख प्यासादि के कष्टों को सह कर साधना पथ को अपनाना और सच्चे शिव का ज्ञान प्राप्त कर अपने तक सीमित न करके नकली शिव भक्तों से जीवन भर संघर्ष करके सच्चे शिव का वैदिक स्वरूप समझना, इत्यादि पावन संदेश का वाहक होने से यह रात्रि सचमुच शिवरात्रि बन कर संसार के लिये कल्याणकारी बनी। सविता– सबको प्रेरणा देने वाले समग्र ऐश्वर्य तथा वेद ज्ञान के अधिपति सविता देव के वेदोक्त सत्य स्वरूप को बता कर अज्ञान में भटकते हुये मानव को अमरता प्राप्त कराने वाली रात्रि यथार्थ में बोध रात्रि बन गई।

यह सार है उस घटना का जो शिवरात्रि की रात को मूलशंकर के साथ उस मंदिर में घटी थी जिसमें वह अपने पिता जी के साथ पूजा करने के लिये बैठे थे। आज उस सारी घटना में जाने से कोई लाभ नहीं। हमें केवल यह देखना है कि एक छोटा सा बालक मूलशंकर रातभर जागता रहा और जागते जागते उसने जो कुछ देखा उसका उसके अबोध मन और जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ? वह बालक यदि सो जाता तो आज हमारा इतिहास किसी और ही तरह से लिखा जाता फिर न तो कोई आर्य समाज का नाम सुनने वाला होता और न ही हमारे देश में वैचारिक क्रान्ति पैदा होती जिसने देशवासियों को फिर से जगाया था।

ऐसी घटनाएं कई और महापुरुषों के जीवन में भी मिलती हैं और ऐसी ही घटना जिसने एक छोटे से बालक मूलशंकर को महर्षि दयानन्द बना दिया शिवरात्रि की रात को लाखों करोड़ों लोग भगवान शिव की पूजा करते हैं परन्तु जिस मंदिर में मूलशंकर अपने पिता के साथ पूजा करने गये थे। वहां उन्होंने देखा कि शिव की मूर्ति पड़ी है। उस पर कोई फूल चढ़ा रहा है, कोई उन्हें मिष्ठान भेंट कर रहा है और इस प्रकार सब लोग प्रसाद चढा कर धीरे धीरे सो गये। बालक मूलशंकर देखता रहा कि जिस शिव की पूजा करने वह आए हैं वह कहां है? इतने में उन्होंने देखा कि एक चूहा वहां आया और वह उस मिठाई को खाने लगा जो शिव की मूर्ति पर चढ़ाई गई थी। इस घटना ने मूलशंकर के मन में हलचल पैदा कर दी। वह सोचने लगे कि यदि यह मूर्ति है तो वास्तव में सच्चा शिव कहां हैं? और यह चूहा यहां क्यों आया। उसे डर जाना चाहिये था और यदि आ गया तो शिव को उसे हटा देना चाहिये था। परन्तु यह कुछ भी नहीं हुआ और इस घटना ने बालक मूलशंकर के मन में हलचल पैदा कर दी जिससे प्रभावित होकर वह घर से निकल पड़े। केवल सच्चे शिव की तलाश में। इसी प्रयास में वह बालक मूलशंकर एक दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती बन गये।

महर्षि के सारे जीवन पर यदि हम गम्भीरतापूर्वक विचार करें तो हम इसी परिणाम पर पहुंचेंगे कि जो कुछ महर्षि ने अपने जीवन में किया है वह केवल इसलिये हो सका क्योंकि वह उस रात जागते रहे। वह स्वयं जगे और फिर देशवासियों को सदा जगाते रहे। वेद में कहा गया है कि यो जागार: तम् ऋच: कामयन्ते अर्थात जो जागता है, वेद की ऋचाएं उनको चाहती हैं।

हम प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के रूप में मनाते हैं और उस महान ऋषि के अलौकिक उपकारों का स्मरण करके उनके प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करते हैं परन्तु केवल महर्षि का गुणगान करने से हमारा कर्त्तव्य पूरा नहीं हो जाता। जिस ऋषि ने महाभारत के पश्चात वैदिक भक्ति की लुप्त ज्योत्सना को पुन: प्रज्ज्वलित कर ईश्वर के नाम पर अनर्थमूल का भ्रान्त, अज्ञान अंधकार में भटकने वाले मानव को सत्य पथ के दर्शन कराएं, उसके प्रति जितना भी नमन किया जाये उतना कम है। महर्षि दयानन्द का हम सब पर बहुत ऋण है। यदि हम उसे चुकाने के लिये कोई प्रयास नहीं करेंगे तो इतिहास हमें कदापि माफ नहीं करेगा। इसलिये ऋषिबोध उत्सव के दिन हम केवल उत्सव मना कर संतोष न कर लें अपितु हमें उनके उस संदेश को कभी नहीं भुलाना चाहिये।

बोधोत्सव पर आत्मावलोकन करें

ले०—महात्मा चैतन्यमुनि तहसील सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हिमाचल प्रदेश)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस धरा पर जिस समय अवतरित हुए उस समय चारों और पाखण्ड और आडम्बर फैला हुआ था। लोग धर्म के स्वरूप को भूल चुके थे, एक परमात्मा के स्थान पर पत्थरों और व्यक्तियों की पूजा हो रही थी। आर्यों के आलस्य और प्रमाद के कारण वेद का पढ़ना-पढ़ाना तथा सुनना-सुनाना लुप्त हो गया था। मातृशक्ति को पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार नहीं था। छुआछूत का कोढ़ समाज को जर्जर कर रहा था। भारत मां परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी। हिन्दू लोग धड़ाधड़ विधर्मी बनकर राष्ट्र-भक्ति से विमुख हो रहे थे। मृत प्राय समाज एवं राष्ट्र को संजीवनी पिलाने वाला कोई नहीं था। इन समस्त बुराईयों से लड़ना तो दूर रहा इन्हें समूल नष्ट करने की कल्पना तक करने वाला भी कोई नहीं था। ऐसे विकट समय में महर्षि जी ने समूल सुधार का बीड़ा उठाकर अनुपम साहस का परिचय दिया। गुरू विरजानन्द जी को अपना समूचा जीवन समर्पित करने के बाद उन्होंने स्थान-स्थान पर जाकर शास्त्रार्थ किए अनेकों प्रवचन दिए तथा व्यक्तिगत रूप से भेंटें करके अनेक लोगों का पथ-प्रदर्शन किया। यही नहीं उन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश, संस्कार-विधि, आर्याभिविनय, गोकरूणानिधि, ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य-रत्नमाला, पंचमहायज्ञ विधि आदि अनेक अद्‌भुत ग्रन्थों की रचना की।

टंकारा की धरती को त्यागते समय उनके दो ही सपने थे-सच्चे शिव को प्राप्त करना तथा मृत्युजंयी बनना। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उन्होंने घोर तपस्या करके योग की अनेकों सिद्धियां प्राप्त की मगर वे इतने लोकेषणा रहित थे कि अपनी यौगिक सिद्धियों का कहीं पर भी किसी प्रकार का प्रदर्शन आदि नहीं किया। वे आदित्य ब्रह्मचारी थे। उनके ब्रह्मचर्य बल का लोगों ने कई बार प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया। संसार में और भी अनेकों ब्रह्मचारी हुए मगर हनुमान जी ने श्रीराम की सेवा करने के लिए ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया। परशुराम ने इक्कीस बार क्षत्रियों का संहार करने के लिए, भीष्म ने अपने पिता की तुच्छ कामना को पूरा करने के लिए ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया मगर महर्षि जी ने अपने गुरू की आज्ञा मानकर संसार के उपकार के लिए यह व्रत धारण करके आर्ष ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार तथा समाज और राष्ट्र-सेवा के लिए अपना समूचा जीवन आहुत कर दिया। उन्हें जीवन में एक क्षण के लिए भी कामवासना उद्वैलित नहीं कर पाई। वे सत्यवादी थे। उनके जीवन में कितनी ही बार कितने ही प्रलोभन आए मगर वे कभी भी असत्य के पक्षधर नहीं बनें। प्रभु भक्त होने के कारण उनमें अद्‌भुत सहनशक्ति तथा निर्भीकता थी, वे दयालुता तथा परोपकार की साक्षात् मूर्ति थे। मानव तो मानव उनसे किसी पशु का दर्द भी नहीं देखा जाता था। जीवन पर अपने साथ अपकार करने वालों को सदा क्षमा ही करते रहे। यहां तक कि अन्त में जिस जगन्नाथ नामक व्यक्ति ने ज़हर दिया, संसार से प्रयाण करने से पूर्व उसे भी अपने पास से धन देकर नेपाल की ओर भाग जाने की प्रेरणा दी ताकि वह पकड़ा न जा सके। वे सच्चे समाज सुधारक थे। उन्हीं की प्रेरणा से महिलाओं के लिए विद्या ग्रहण करने के दरवाजे खुले। वे ही अछूतों को उनके अधिकार व सम्मान दिलाने वाले थे। उन्होंने सतीप्रथा तथा बालविवाह और बलि-प्रथा आदि कुप्रथाओं का प्रबल विरोध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया। पाखण्ड और आडम्बरों को जड़-मूल से उखाड़ने के लिए उन्होंने स्वयं को पूर्णतः झोंक दिया। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने धर्म को आचरण के साथ जोड़ने की बात कही अन्यथा धर्म मात्र बाहरी पहरावे और चिन्ह आदि धारण करने तक ही सीमित हो गया था। उन्होंने जिस सामाजिक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया था, उसे आगे बढ़ाने के लिए उनके शिष्यों ने अपने आपको आहुत कर दिया तथा पण्डित लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, पण्डित गुरूदत्त आदि अन्य अनेक मनीषियों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। महर्षि जी ने प्राचीनतम शिक्षा पद्धति के जो सूत्र प्रस्तुत किए थे उन्हें कार्यान्वित करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हंसराज आदि ने सहर्ष अपने आप को होम कर दिया। आर्यसमाज का ऐसा स्वर्णयुग आया कि इस संस्था ने चारों ओर अपने कार्यों की धूम मचा दी तथा आर्यसमाज व आर्यों के नाम एक आदर्श के रूप में लिए जाने लगे।

उन्होंने लोगों को पुन: परमात्मा के ज्ञान अर्थात् वेदों की ओर लौटने का न केवल आह्वान किया बल्कि अपने प्रबल तर्कों और प्रमाणों के आधार पर वेदों को परमात्मा द्वारा दिया गया ज्ञान भी सिद्ध किया। वेद के नाम पर जो कुछ भी अनर्गल व अप्रासंगिक हो रहा था, अपने वेद-भाष्य के द्वारा उन सब आक्षेपों का निराकरण कर दिया। निरूक्त के आधार पर वेदों का पारमार्थिक और व्यवहारिक पक्ष रखकर वेद के सम्बन्ध में प्रचलित समस्त भ्रान्तियों को दूर करने का ऐतिहासिक कार्य किया। यह सिद्ध करके बता दिया कि वेद में बहुदेवता वाद, लौकिक इतिहास तथा अप्रासंगिक एवं अनित्य विनियोग वाद नहीं है। अज्ञानी लोगों को बताया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है इसलिए उनका अर्थ परमात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव के विपरीत नहीं किया जाना चाहिए, वह सृष्टि-नियम के विरूद्ध नहीं होना चाहिए, वह मानव उन्नति में सहयोगी होना चाहिए, वह अनुकूल, तर्कानुमोदित, बुद्धिसंगत होना चाहिए। उन्होंने वेदों को समझने की जो आंख दी उससे वेद निन्दक भी वेदों को गडरियों के गीत कहना छोड़कर प्राचीनतम ग्रन्थ, समस्त ज्ञान-विज्ञान का पुस्तक तथा ईश्वरीय ज्ञान कहने को बाधित हुए। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध क्रान्तिकारी अरविन्द घोष जी ने कहा-'वेदों के रहस्यों को खोलने की सही कुंजी यदि किसी के पास थी तो वह केवल दयानन्द के पास थी.......वेदों में विज्ञान की ऐसी बातें भी है जिनका पता आज के वैज्ञानिकों को नहीं........दयानन्द ने वेदों में निहित ज्ञान के विषय में अत्युक्ति नहीं बल्कि अल्पोक्ति से काम लिया है.......'

महर्षि जी में राष्ट्र-भक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी। अठारह सौ सतावन के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में उन्होंने अपनी सक्रिय भूमिका निभाई थी इस बात के आज कितने ही प्रमाण मिल रहे हैं। कुछ कारणों से वह क्रान्ति सफल नहीं हो सकी मगर वे उससे निरूत्साहित नहीं हुए बल्कि उन कारणों को खोज जिनके कारण वह असफलता मिली थी और उन कारणों को दूर करने के लिए कृत-संकल्प हो गए। वे निर्भीक शब्दों में स्वतन्त्रता की मांग करने वाले प्रथम व्यक्ति थे। उन्होंने ही सर्वप्रथम अपने ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में स्वराज्य की बात कही, अनेक ग्रन्थों में विदेशी राज्य के समूल नाश की कामनाएं की तथा अंग्रेज अधिकारी के मुंह पर ही स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि मैं तो परमात्मा से रात-दिन यह प्रार्थना करता हूँ कि मेरे राष्ट्र को विदेशी राज्य से शीघ्र मुक्ति मिले। सभी समाजसुधारकों तथा अग्रणी नेताओं ने इस बात को स्वीकारा है कि स्वतन्त्रता के प्रथम प्रणेता तथा राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत महर्षि दयानन्द जी ही थे। यह बात अक्षरश: सत्य है कि यदि उन्होंने अपने देश वासियों को स्वराज्य प्राप्त करने की प्रेरणा न दी होती तथा आर्यसमाज की स्थापना न की होती तो भारत पन्द्रह अगस्त, 1947 को स्वतन्त्र न हो पाता। आर्यसमाज एक ऐसी क्रान्ति बनकर उभरा कि आर्यसमाजी होने का अर्थ ही होता था-क्रान्तिकारी। बाल गंगाधर तिलक जी के शब्द है कि स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है यह प्रेरणा उन्हें सत्यार्थ-प्रकाश से मिली। जिन लाला लाजपत राय ने स्वतन्त्रता के लिए स्वयं को आहुत कर दिया उनके शब्द है-'आर्यसमाज मेरी धर्म की मां और महर्षि दयानन्द मेरे धर्म पिता है।' उनकी शहीदी पर जिन क्रान्तिकारियों ने इस हत्या का बदला लेने की प्रतिज्ञा की तथा उस जालिम को मौत के घाट उतारा जिसने लाला जी पर लाठियां बरसाई थीं, उनमें भगतसिंह प्रमुख थे। भगतसिंह जी का पूरा परिवार सरदार अर्जुनसिंह, किशनसिंह, अजीतसिह आदि महर्षि जी की राष्ट्रवादी विचारधारा के कारण ही क्रान्तिकारी बना था। अनेक क्रान्तिकारियों के प्रेरणा स्त्रोत पण्डित रामप्रसाद विस्मिल जी अपनी आत्मकथा में लिखते है कि सत्यार्थ-प्रकाश ने ही उन्हें क्रान्तिकारी बनाया। चन्द्रशेखर आजाद आपके ग्रन्थ आर्याभिविनय का जब तक पाठ नहीं कर लेता था वह प्रातराश नहीं करते थे। यही नहीं बल्कि उन्हीं के परम शिष्य पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा ने विदेश जाकर 'भारत-भवन' की स्थापना की थी जहाँ वीर सावरकर, मदन लाल ढ़ींगरा, हरदयाल आदि इनके शिष्य बनें तथा विदेश में भी क्रान्ति क़ी ज्वाला को प्रज्वलित रखा। भाई परमानन्द तथा भाई बालमुकुन्द आदि अन्य अनेकों क्रान्तिकारियों का प्रेरणा-स्त्रोत भी आर्यसमाज ही था। उन्होंने स्वयं बोध प्राप्त करके संसार को परमात्म-बोध दिया। आत्म-बोध, मानव-बोध, समाज-बोध, वेद-बोध, कर्म-बोध, धर्म-बोध, शिक्षा-बोध, साहित्य-बोध, भाषा-बोध, अर्थ-बोध, विज्ञान-बोध तथा राष्ट्र-बोध दिया। श्री अरविन्द जी ने इसीलिए पहाड़ों की चोटियों से तुलना करते हुए महर्षि जी को सर्वोच्च शिखर की उपमा दी है। वास्तविकता यह है कि उनकी किसी से तुलना ही नहीं की जा सकती है क्योंकि वे अतुलनीय हैं.......

महर्षि जी ने अपनी विद्वता या योग का प्रदर्शन नहीं किया, न ही किसी नए मत या सम्प्रदाय की स्थापना की, न कोई नया गुरूमन्त्र ही दिया और न ही किसी नई पूजा पद्धति का विधान किया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मेरा कोई भी नया मत या सम्प्रदाय स्थापित करने की कोई इच्छा नहीं है और न ही मैंने अपनी ओर से कोई बात कही है बल्कि ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि तक ऋषि-मुनियों ने वेदानुसार जिन मान्यताओं को माना है उसी को लोगों के सामने रखा है क्योंकि अपने आलस्य, प्रमाद तथा एषणाओं के कारण लोग उन मान्यताओं को भूल चुके थे।

हालांकि उनकी इच्छा किसी नई संस्था की स्थापना करने की भी नहीं थी मगर लोगों के आग्रह पर 'आर्यसमाज' की स्थापना की और संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य बताया अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और समाजिक उन्नति करना तथा इस उन्नति का आधार वेदों को ही माना। उन्होंने आर्यसमाज के जो दस नियम बनाए वे संसार के इतिहास में अद्वितीय ही नहीं बल्कि अनुपम भी है। उन नियमों के रहते कोई भी इस संस्था पर उंगली नहीं उठा सकता है। उप-नियमों के रूप में संस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए ऐसे सूत्र दिए जिनका अक्षरश: अनुपालन करने से आर्यसमाज कभी भी अधोगति को प्राप्त नहीं हो सकता। यही कारण है कि जब तक चरित्र को प्रमुखता दी गई तथा नियमों और उपनियमों का भली प्रकार से कार्यान्वयन होता रहा, आर्यसमाज ने अभ्युदय के व्योम् को छू लिया मगर आज स्थिति कुछ विपरीत है। हालांकि आज भी बहुत से आर्यसमाजी ऐसे हैं जो पूर्णरूप से महर्षि जी के मन्तव्यों को साकारता देने में लगे हुए हैं मगर इस सत्य को भी स्वीकारना होगा कि आज अधिकतम समाजों में महर्षि जी के नियमों-उपनियमों का अनुपालन नहीं हो रहा है। इस समाज का सदस्य बनने के लिए जिस सदाचार को आधार बनाया गया था आज उसका कोई महत्व नहीं रहा है, साधारण सदस्यों और सभासदों के लिए जो नियम बनाए गए थे, उन्हें आज कोई मानने वाला नहीं रहा, उपस्थिति रजिस्टर का प्रयोग या तो किया ही नहीं जाता और यदि किया जाता है तो केवल अपने गुट को शक्तिशाली बनाने के लिए, शतांश देने की बात कोई भी मानने के लिए तैयार नहीं। आश्चर्य तो यह है कि ऐसे आचारहीन तथा नियम-उपनियमों का उल्लंघन करने वाले लोग ही अपने आप को सच्चे आर्य कहने लगे हैं तथा जो महर्षि जी के सदाचार एवं नियम-उपनियमों की बात करता है उसे बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है। उस विशुद्ध आर्य को परे हटाने के लिए ये तथाकथित आर्य संगठित हो जाते हैं। इस का दुष्परिणाम यह हुआ कि बहुत सी सभाओं, आर्यसमाजों तथा उससे सम्बन्धित अन्य संस्थाओं तथा सम्पतियों पर गैर आर्यों का अधिपत्य हो गया है..... वोट की राजनीति के अन्तर्गत या 'सबको जोड़कर चलो' के नाम पर बड़े-बड़े अनुशासनहीनों, असत्यवादियों तथा घपला करने वालों का पक्ष लेने वाले तो बहुमत में मिल जएंगे मगर सत्य और सदाचारी का साथ देने वाला कोई विरला ही बचा है। इससे सच्चे आर्य अन्तत: उपराम होते जा रहे हैं क्योंकि आचारहीन, आध्यात्मिकशून्य, मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति तथा आर्यसमाजों के मन्तव्यों से पूर्णतया अनभिज्ञ व्यक्तियों द्वारा कब तक अपमानित हुआ जा सकता है.......उनके उपराम होने से स्वार्थी तथा पद्लोलुप व्यक्ति प्रसन्न ही होते हैं शर्मिन्दा नहीं। इस प्रक्रिया के चलते बहुत सी सभाओं या आर्यसमाजों पर दुराचारी, असत्यवादी तथा अपनी-अपनी एषणाओं को परितृप्त करने वाले अनार्यों का अधिपत्य होता जा रहा है.......जिसके कारण महर्षि जी द्वारा चलाई गई प्रचार-प्रसार की प्रक्रियाएं शिथिल तथा दिशाहीन हुई है.......भले ही दिख रहा हो कि हम बढ़ रहे है या हम कार्य कर रहे है मगर ऐसे लोग संभवत: नींव से हटकर बनाए गए भवन का हश्र नहीं जानते है या अपने-अपने स्वार्थो की पट्टी बान्धने के कारण जानना नहीं चाहते हैं। ऐसे स्वार्थी लोगों का तो कुछ बिगड़ने वाला नहीं है मगर महर्षि दयानन्द जी को विस्मृत करने के कारण आर्यसमाज की गरिमा पर ठेस पंहुची है तथा अन्तत: हम ऐसे पतन के मार्ग पर चल पड़े है जिसका अन्त केवल और केवल विनाश है......

यह लघु लेख न तो किसी व्यक्ति विशेष, न किसी विशेष सभा या आर्यसमाज पर कटाक्ष है बल्कि विनम्र निवेदन है कि हम महर्षि दयानन्द जी के अनुयायी आत्मान्वेषण तथा आत्मावलोकन करें कि महर्षि जी की क्या भावना थी और आज हम कहां आकर पहुंचे है। जहां तक महर्षि दयानन्द जी तथा आर्यसमाज की उत्कृष्ट एवं सार्वभौमिक विचारधारा का प्रश्न है, आज यह विचारधारा अधिक प्रासंगिक है मगर देखना यह है कि हम प्रासंगिक रहे है या कि नहीं। कब तक हम आत्मावलोकन किए बिना इस प्रकार से रसातल को जाते रहेंगे........एक समय वह भी था जब अंग्रेजी राज्य में आर्यसमाजी की बात को प्रमाणित माना जाता था मगर आज हम कहां खड़े है.......आर्यसमाज में कराए गए विवाह को न्यायालय में भी प्रमाण माना जाता था मगर आज उस पर भी क्यों उंगलियां उठने लगी है.....क्यों ? अपनी अकर्मण्यता, सिद्धान्तहीनता तथा आपसी तालमेल और सौहार्द के अभाव के कारण ही आज समाज व देश के लिए आदर्श बनना तो

दूर रहा, हमारे पूर्व मनीषियों ने समाज व देश के लिए जो कुर्बानियां की हैं, देश व समाज के लिए जो सर्वाधिक काम किया है, राजनेताओं तथा भावी पीढ़ी में उसे दर्ज कराने तक में हम अक्षम हो गए है.......क्या इस पर चिन्तन करना अनिवार्य नहीं है ? हमारा यह मानना है कि यदि महर्षि दयानन्द जी के आदेशों का अक्षरश : पालन किया जाए, गैर आर्यसमाजियों की भीड़ बढ़ाने के स्थान पर सत्यवादी, सच्चरित्र एवं सिद्धान्तवादी लोगों को प्रश्रय दिया जाए, नियम-उपनियमों का दृढ़ता के साथ अनुपालन किया जाए तो आज भी हम अपने उस पुरातन गौरव को प्राप्त कर सकते है अन्यथा अन्य और कोई मार्ग नहीं है। कथनी और करनी जब तक एक नहीं होगी तब तक औरों की बात तो दूर रही ऐसे लोग अपने परिवार तक को भी आर्यसमाजी नहीं बना पाते हैं मगर इसके विपरीत यदि स्वयं मन, वचन और कर्म से सिद्धान्तवादी बनेंगे तो इससे ही अपने परिवार और समाज के अन्य लोग भी आर्यसमाज की ओर आकर्षित होंगे। इसी से हमारा संगठन शक्तिशाली बनेगा तथा हम सही अर्थों में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना वर्चस्व स्थापित कर सकेंगे। सभाओं तथा आर्यसमाजों में भ्रष्ट, सिद्धान्तहीन, स्वेच्छाचारी, अनुशासनहीन, असत्यवादी, नैतिकताहीन तथा गैर आर्यसमाजियों को सभासद बनाना या अधिकार देना कभी भी श्रेयष्कर, नहीं हो सकता है। यहां हम यह बात भी कहना चाहते हैं कि आज भी संसार में आर्यसमाज जैसी उत्कृष्ट संस्था और कोई नहीं है और न ही आर्यसमाज में सिद्धान्तवादियों का अकाल है। आज भी महर्षि दयानन्द जी के बहुत से दीवाने समर्पित होकर अपने-अपने ढंग से कार्य कर रहे हैं......वे किसी एषणा के कारण नहीं बल्कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ऋण से उऋण होने के लिए तथा प्राणीमात्र के कल्याण की भावना और अपने जीवन को सार्थकता देने के लिए रात-दिन चुपचाप कार्यरत हैं.......उनके मानस पटल से महर्षि जी का महान व्यक्तित्व तथा उनके सिद्धान्त एक पल भर के लिए भी विस्मृत नहीं होते हैं तभी तो वे आज भी महर्षि जी द्वारा रखी गई नींव पर विशाल भवन बनाने के सपने को साकार करने में अनवरत् लगे हैं। ऐसे लोगों को संरक्षण और सवंर्धन देना ही समय की मांग है अन्यथा महर्षि दयानन्द जी को विस्मृत करके चलना व्यक्ति, आर्यसमाज, समूचे समाज तथा राष्ट्र और विश्व के लिए आत्मघाती कदम होगा। महर्षि के बोधोत्सव पर प्रत्येक ऋषिभक्त को ऐसी प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम महर्षि के मन्तव्यों से जरा सा भी इधर-उधर नहीं होंगे, यदि होते हैं तो इससे बड़ा पाखण्ड तथा कृतघ्नता और कोई नहीं हो सकती है......

आर्य समाज फोकल प्वायंट लुधियाना का 34वां वार्षिक उत्सव

आर्य समाज फोकल प्वायंट अर्बन एस्टेट-1 जमालपुर लुधियाना का 34वां वार्षिक उत्सव 7 मार्च से 10 मार्च 2013 तक बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है जिसमें उच्च कोटि के वैदिक विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। 7 एवं 8 मार्च 2013 को प्रवचन प्रात: 8.00 बजे से 10.00 बजे तक और सायं 6.00 बजे से 8.00 बजे तक आर्य समाज के प्रांगण में होगा। जिसमें मुख्य वक्ता श्री राजू जी वैज्ञानिक वैदिक प्रवक्ता दिल्ली के प्रवचन होंगे। भजनोपदेश श्री राजेश अमर प्रेमी जालन्धर होंगे। यज्ञ के ब्रह्मा श्री पंडित महेश वाचस्पति जी पुरोहित आर्य समाज फोकल प्वायंट होंगे। 9 मार्च 2013 को प्रात: 8.00 बजे से 10.00 बजे तक यज्ञ भजन एवं प्रचन होंगे। महिला सम्मेलन सायं 4.00 बजे से 6.00 बजे तक होगा जिसकी अध्यक्षता डा.सुप्रीता जी राज अस्पताल करेंगी। मुख्य समारोह 10 मार्च 2013 को होगा जिसमें यज्ञ पूर्णाहुति एवं आशीर्वाद प्रात: 8.30 बजे से 10.00 बजे, 10.30 बजे ध्वजारोहण श्रीमती वीना शर्मा एवं श्री रोशन लाल आर्य जी करेंगे। 11.00 बजे से 1.30 बजे तक श्री रजनीश आहूजा की अध्यक्षता में सम्मेलन होगा। सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि वह अपने परिवार तथा ईष्ट मित्रों सहित पधार कर ज्ञान वर्षा का लाभ उठाएं।

-महेन्द्र प्रताप आर्य प्रधान आर्य समाज

आर्य समाज जालन्धर छावनी में ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज जालन्धर छावनी में 10 मार्च को प्रात: 9.30 बजे से 12.00 बजे तक ऋषि बोधोत्सव मनाया जा रहा है जिसमें यज्ञ, भजन के पश्चात आर्य स्कूल जालन्धर छावनी के बच्चों का कार्यक्रम होगा। इस अवसर पर मुख्य वक्ता डा. श्री रामावतार जी तथा श्री तिलक राज जी शास्त्री होंगे। 12 बजे यज्ञ शेष और ऋषि लंगर बांटा जाएगा। सभी धर्म प्रेमियों से निवेदन है कि वह समय पर पधार कर धर्म लाभ उठावें। इससे पूर्व आर्य समाज में 17 फरवरी को बसन्त पंचमी का पर्व भी बड़ी धूमधाम से मनाया गया था जिसमें श्री चन्द्र गुप्ता जी यजमान बने थे।

-जवाहर लाल महाजन मंत्री

शिवरात्रि और महर्षि दयानन्द

-श्री आचार्य भद्रसेन, 182-शालीमार नगर होशियारपुर

श्री उत्तम चन्द जी शरर केवल एक कवि, लेखक, प्राध्यापक, प्रखर प्रवक्ता ही नहीं, अपितु उन में युवकों को आकर्षित, संगठित करने की अपार ऊर्जा थी। इस से भी बढ़कर आर्यसमाज के प्रसार की अदम्य तड़प, लगन भी थी इस के लिए वे सर्वदा प्रयत्नशील रहे। प्राध्यापक उत्तमचन्द जी शरर का कभी स्थान का स्मरण नहीं। एक भाषण-'महर्षि दयानन्द और शिवरात्रि' पर सुना था। वह आज भी मुझे हर तरह ही बहुत उपयोगी प्रतीत होता है। वह शब्दश: स्मरण तो नहीं, पर प्रस्तुत रचना में अधिकतम भाव शरर जी के ही हैं।

शिवरात्रि-शिव तथा रात्रि दो शब्दों का मेल है। पुराणों की परम्परा में त्रिदेवों की चर्चा आती है। इन में से ब्रह्मा संसार की रचना करते हैं, तो विष्णु इस का पालन करते हैं। शिव-सहांरकर्ता के रूप में प्रसिद्ध हैं। इसीलिए शिव जी को रूप महाकाल के नाम से भी स्मरण किया जाता हैं। वे संहार के साधन के रूप में पिनाकपाणि, त्रिशूलधारी तथा अवतत धन्वा भी कहलाते हैं। शिव बारात कें बारातीगणों में भूत-प्रेत-पिशाच भी गिने जाते हैं। शिवकृत संहार के परिणाम को दर्शाने के लिए ही शिव जी के गले में मुक्तमाला के साथ नरमुण्डमाला भी विराजती है। संहार तमोगुण का कार्य है, और तमसामयी रात्री भी तमोगुणी है। अत: संहार के उस देवता का पर्व भी रात को ही आयोजित होता है। हां, मनुस्मृति (1, 72-3) (ब्राह्म) रात्रि शब्द प्रलय के अर्थ में भी चित्रित किया गया है। श्मशान भूमि को शिवपुरी कहना तथा अनेक शिवमन्दिरों का श्मशान भूमि के पास होना शिव तथा संहार के सम्बन्ध को समर्थित करता है।

शिवरात्रि पर्व का विशेष रूप से शिव जी से सम्बन्ध है। अत: शिवमन्दिर में ही विशेष रूप से इस पर्व का आयोजन होता है। मध्यकाल में कुछ लोग वर्णों की तरह शिव-वैष्णव या राम-कृष्ण (भक्त) के रूप में भी बंटे हुए थे और वे अपनों-अपनों के ही पर्व, तीर्थ, व्रत मनाते थे। पर आज शैवों से उतर भी इस पर्व में सम्मिलित होते हैं।

ऐतिहासिक व्रत-ऐसी मान्यता है, कि इस पर्व पर दिन भर निराहार रह कर जो शिवमन्दिर में रात को सपूजन जागरण करते हैं, उन्हें शिव के दर्शन होते हैं। इसी भावना से अभिभूत होकर अपने पिता जी के प्रोत्साहन पर बालक मूलशंकर ने 14वें वर्ष में शिवरात्रि के व्रत को रखा था। वहां सर्वप्रसिद्ध जो घटना घटी, वह शिवरात्रि के अर्थ के अनुरूप सच्चे अर्थों में बालक मूल के लिए कल्याण की रात (घड़ी) सिद्ध हुई। उस रात्री को अंकुरित हुए विवेक ने विकसित होकर न केवल मूल शंकर को अमर बना दिया, अपितु लाखों व्यक्तियों के लिए वह शिवरात्रि कल्याणकारिणी सिद्ध हुई। अज्ञान, अन्धविश्वास, अविवेक, रूढिवाद रूपी रात के घोर अन्धकार में उस ज्ञान ज्योति ने सत्यज्ञान, वेद विज्ञान, विवेक और सदाचार का प्रकाश किया।

जिस के पुण्य प्रताप से अज्ञानियों को ज्ञान, रोगियों को आरोग्य, मरणासन्नो को जीवन, अन्धों को आंखें, कायरों को निर्भयता और विदिशा में भटकते हुओं को सत्पथ प्राप्त हुआ। वस्तुत: महर्षि की ज्ञान ज्योति संसार के लिए सत्यज्ञान का सूर्य सिद्ध हुई। जिस के प्रकाश और प्रभाव से प्रभावित होकर किसी कवि ने क्या ही सुन्दर कहा है,

धन्य है, तुम को ऐ ऋषि, तू ने हमें जगा दिया।
सो-सो के लुट रहे थे हम, तू ने हमें बचा दिया॥
अन्धों को आंखें मिल गई, मुर्दों में जान आ गई।
जादू सा क्या चला दिया, अमृत सा क्या पिला दिया॥
तुम में कुछ ऐसी बात थी, स्वामी जी तेरी बात पर।
कितने शहीद हो गये, कितनों ने सर कटा दिया॥
श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने, सीने पे खाई गोलियां।
हंस-हंस के हंसराज ने, तन-मन व धन लुटा दिया॥
अपने लहू से लेखराम, तेरी कहानी लिख गया।
तू ने ही लाला लाजपत, शेरे बब्बर बना दिया॥

शिवस्वरूप-शिवभक्त बड़ी श्रद्धा से सोल्लास जिस शिव को अपना इष्ट देव मानते हैं। उस का पुराणों में वर्णन करते हुए कहा है, कि उस की जटाओं से गंगा बहती है, सिर में चन्द्रमा चमकता है, और माथे पर तीसरा नेत्र विराजमान है। उस कैलाशवासी (तभी तो उसको गिरीश, गिरिक्षित, गिरिचर, गिरिशन्त कहते हैं, हां, कैलाश हिमालय के उच्च शिखर का नाम है) के गले में विषधर सर्प लिपटे हुए हैं तथा उस ने अपने सारे शरीर पर भस्म रमाई हुई हैं, आजकल ऐसा एक विचित्र चित्र भी अनेक स्थानों पर देखने में आता है, की परिकल्पना, चित्रण, तत् तत्सम्बद्ध नानाविध प्रचलित कथाओं, आख्यानों का

विश्लेषण करने पर हर विवेकशील असमञ्जस में पड़ जाता है, कि इतना अधिक श्रमसाध्य, परस्पर विरोधी कल्पना संसार में क्यों रची गई ? जब कि संसार की रचना, पालना, विनाश का कार्य एक ही ईश्वर सम्पन्न कर सकता है, तो पहले एक-एक कार्य के लिए पृथक-पृथक तीन देव माने गए। फिर उनकी भिन्न-भिन्न मूर्तियां, परस्पर विरोधी कहानियां, उन से जुड़े प्रकृति नियम से विरूद्ध चित्र-विचित्र आख्यान कल्पित किए गए।

इस प्रकार एक-एक कल्पना के साथ अनेक कल्पनायें, भक्तिस्तोत्र, धर्मस्थल, पूजा प्रक्रिया, तीर्थ, व्रत-पर्व, अनेकविध साज-सज्जा सृजी गई।

ज्ञानगंगा-पुनरपि इस चित्रण में शिव जी की जटाओं से गंगा का प्रवाह प्रवाहित हो रहा है। अत: उन को गंगाधर, गंगाधारी कहते हैं और गंगा को दुग्धवर्णा, पुणयसलिला, पीयूषसलिला, पापहारिणी माना जाता है। वस्तुत: ये सारे भाव ज्ञान पर ही पूर्णत: चरितार्थ होते हैं। ऐसी ज्ञान की गंगा को ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आजीवन जहां भारत के अनेक नगरों में उपदेशामृत के माध्यम से बहाया, वहां सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि, ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका, वेदभाष्य, व्यवहार-भानु, पञ्चमहायज्ञविधि आदि छोटे-बड़े बीसों ग्रन्थों में भी महर्षि की लेखनी रूपी सरस्वती का प्रवाह प्रवाहित हुआ। इन ग्रन्थों में चर्चित ज्ञान के परिचयार्थ सत्यार्थप्रकाश का परिचय असंगत न होगा।

सत्यार्थप्रकाश-सत्यार्थप्रकाश में चौदह समुल्लास हैं। प्रथम के प्रारम्भ में 'वेद की कुञ्जी' के रूप में यह संकेत है, कि वेदों में आए, अग्नि, इन्द्र आदि केन्द्रीय शब्द कब, कहां, किसके वाचक होते हैं और जब ये ईश्वरपरक होते हैं, तो इन का वह प्रकरणगत स्वारस्य कैसे स्पष्ट होता है ? इस के उदाहरणार्थ एक सौ से अधिक गुण, कर्म, स्वभाव बोधक ईश्वर के नाम जहां यहां विश्लेषित हुए हैं, वहां ओ३म् की विशद व्याख्या भी है।

द्वितीय में शिशुपालन, बालोपयोगी शिक्षा और जन्म, भूत-प्रेत की समीक्षा भी है। तृतीय में पढ़ने-पढ़ाने का प्रकार, आर्षग्रन्थों की उत्कृष्टता, अग्नि होत्रादि पञ्चमहायज्ञ, यज्ञ के लाभ, विद्यार्थी के लक्षण-कर्त्तव्य, वेदाध्ययनादि धार्मिक कृत्यों में नर-नारी का समान अधिकार, नारी प्रतिष्ठा का प्रतिपादन है।

चतुर्थ में विवाह के भेद, वर-वधू के लक्षण, स्वयंवर विवाह पद्धति, उत्तम गृहस्थ का स्वरूप है। पंचम में वानप्रस्थ, संन्यास आश्रम सम्बन्धी विशेष विचार है।

षष्ठ में मनुस्मृति आदि के आधार पर उत्कृष्ट राजनीति का सर्वांगीण चित्रण है। सप्तम में ईश्वर, वेद और जीव का युक्तियुक्त सत्यस्वरूप और तत्-तत् विषयक शंका समाधान पूर्वक विस्तृत विवेचन है। अष्टम सृष्टि के तत्व, प्रकार और उसकी निर्माण-पालन प्रलय प्रक्रिया आई है।

नवम में विद्या-अविद्या, बन्ध-मोक्ष के वर्णन के साथ मोक्ष प्राप्ति के मार्ग का विस्तृत वर्णन है। दशम में आचार-अनाचार, भक्ष्य-अभक्ष्य का निर्देश है।

एकादश में पुराणों पर आधारित शैव-वैष्णव आदि मत और नवीन वेदान्त, मूर्तिपूजा का चित्रण है। इनमें जो जो अनिष्ट फल हुए होते हैं, और होंगे उन को पक्षपात रहित विद्वान् जान सकते हैं।

मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य के अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है, उस की मिथ्या प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। जिस से मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जान कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है। भूमिका पृ० 2

'सर्वसत्य का प्रचार कर सब को ऐक्य मत में कहा, द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़प्रीति युक्त करा के सबसे सब को सुख लाभ पहुंचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।'

-स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश-पृ० 582

वस्तुत: सत्यार्थप्रकाश सत्य का प्रकाश है, जिस में मानव जीवन से सम्बन्धित अनेक धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि विषयों पर अनुसन्धान पद्धति के अनुसार तुलनात्मक सापेक्ष अध्ययन किया गया है, यह सब अपनी विद्वत्ता, योग्यता प्रदर्शन के लिए नहीं हैं, अपितु केवल सत्य-असत्य के निर्णय के लिए है। जिस से मानव जाति के कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सके। महर्षि ने भ्रान्ति निवारण में पं० महेशचन्द्र न्यायरत्न के प्रश्न के उतर में लिखा है, कि वेदों से लेकर जैमिनि मुनि के मीमांसा दर्शन पर्यन्त तीन हजार ग्रन्थों को प्रमाण मानता हूं। इस से सरलतापूर्वक अनुमान किया जा सकता है, कि उस निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए कितने अधिक सहस्र ग्रन्थों का अध्ययन किया होगा। इससे सिद्ध होता है, कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ज्ञान रूपी गंगा के आगार थे। संसार में वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने धर्म नाम धारियों के पोल खाते को सप्रमाण नग्न किया अर्थात् उस उस असंगत रूप को सर्वजन के समक्ष उजागर किया और धर्म के सच्चे स्वरूप को भी दर्शाया।

शान्तिपुञ्ज-शिव जी के माथे पर चन्द्रमा चमकता है, अत: उन को चन्द्रचूड, चन्द्रमौलि कहते हैं। चन्द्रमा शब्द चदि आह्लादे से बनता है, जो कि प्रसन्नता, निश्छलता का वाचक है। चन्द्रमा का एक नाम सोम भी है, जो कि शान्ति, प्रसन्नता, अक्रोध, शीतलता, पवित्रता का प्रतिनिधि है, महर्षि के जीवन को पढ़ने से ऐसी अनेक घटनायें सामने आती हैं। जिन से यह सिद्ध होता है, कि महर्षि शान्ति, शीतलता के प्रतिमूर्त रूप थे।

जब काशी शास्त्रार्थ में 'पण्डितों' की एक न चली, तो उन्होंने छल-बल से महर्षि को नीचा दिखाने का प्रयास किया।

परन्तु महर्षि के मस्तिष्क में कोई रोष, आवेग की रेखा न खिंची। शास्त्रार्थ के पश्चात ऋषि के आवास पर श्री ईश्वर सिंह जी पहुंचे और देखा महर्षि प्रतिदिन की तरह प्रसन्नवदन टहल रहे हैं। शास्त्रार्थ का षड्यन्त्र महर्षि की शीतलता, शान्ति को भंग न कर सका।

महर्षि दयानन्द के मन-हृदय की काशी के शास्त्रार्थ के षड्यन्त्र के पश्चात ठीक वही स्थिति थी, जैसी श्री राम की वनवास गमन के समय महर्षि-वाल्मीकि ने चित्रित की है-

आहूतस्य अभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकार विभ्रमः॥

अर्थात् राजतिलक के लिए आमन्त्रित करने पर तथा वनवास जाते समय दोनों स्थितियों में श्रीराम के मन में कोई अन्तर लक्षित नहीं हुआ। तभी तो कहा है-विकारहेतौ सति न विक्रियन्ते द्वेषां चेतांसि त एव धीरा (कुमार सम्भव 5,14) वस्तुतः वे ही धीर होते हैं, जो विकार के प्रसंग आने पर भी अडिग रहते हैं।

भारत के गणमान्य नेता न्यायाधीश गोबिन्द रानाडे की अध्यक्षता में महर्षि दयानन्द के पूना में पन्द्रह व्याख्यान हुए। जो आज 'उपदेश मञ्जरी' के नाम से प्रकाशित होते हैं। जब पूना में इन व्याख्यानों का क्रम चल रहा था, वे एक दिन विरोधियों ने स्वामी दयानन्द को बदनाम करने के लिए एक व्यक्ति को गधे पर बिठा कर उस की पीठ पर स्वामी दयानन्द लिख कर और गले में जूतों की माला डाल कर मुर्दाबाद के नारों से नगर में जलूस निकाला। जिस को देखकर खिन्न, हुए कुछ सज्जन महर्षि के पास पहुंचे और सारी घटना बताई। महर्षि ने यह सब सुनकर हास्य भरे शब्दों में कहा-संसार में नकली का यही हाल होता है, और असली दयानन्द तो यहां है।

एक बार कुछ व्यक्ति लाठियां लेकर महर्षि के निवास के पास पहुंचे और गालियां दे देकर कहने लगे, कि हमारे इष्टदेव को नहीं मानता, हम आज ऐसा कर देंगे। उन दिनों बलदेव नाम का एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति स्वामी जी के पास रहा करता था। वह उन गालियां देने वालों को मजा चखाने के लिए आज्ञा मांगने स्वामी जी के पास आया, वहां जा कर देखा, कि स्वामी जी छत पर खड़े उन लोगों की बातों पर हंस रहे हैं।

बलदेव के आज्ञा मांगने पर हंस कर स्वामी जी ने कहा-इन पर क्रोध करने की आवश्यकता नहीं है, वे तो अज्ञानवश ऐसा कर रहे हैं।

संयमी-शिव जी के तीन नेत्र माने जाते हैं, इसीलिए उन को त्र्यक्ष, त्र्यम्बक नाम से स्मरण किया जाता है। कामारि शिव जी ने अपने तीसरे नेत्र से कामदेव को भस्म किया था अर्थात् अपने वश में कर लेने की कथा प्रसिद्ध है। वैसे ही महर्षि दयानन्द ने अपने संयम, तप, ज्ञान और ब्रह्मचर्य के व्रत से कामवासना को पूर्ण वश में कर लिया था।

एक बार कुछ व्यक्तियों ने महर्षि को बदनाम करने के लिए एक वेश्या को प्रलोभन देकर तय किया और स्वामी जी के पास भेजा स्वयं कुछ दूरी पर मौके की ताक में खड़े हो गए है।

वेश्या जब कुछ पास में गई, तो तब स्वामी जी ध्यानावस्थित बैठे हुए थे। महर्षि के तेजस्वी मुखमण्डल को देखकर अपने गन्दे विचारों से भयभीत हो उठी और वह एकदम पछताती हुई उन्हीं पैरों से लौट आई। षड्यन्त्रियों की चाल धरी की धरी रह गई।

मधुरा में जिन दिनों स्वामी दयानन्द गुरू विरजानन्द जी के पास पढ़ा करते थे, तब एक दिन स्वामी जी यमुना नदी के तट पर ध्यान में मग्न थे। इतने में यमुना स्नान से लौटती हुई एक महिला ने श्रद्धावश स्वामी जी के चरणों में सिर रख कर प्रणाम किया। गीले बालों के स्पर्श से स्वामी जी ने आंखें खोलीं और माता-माता कहते हुए यमुना नदी के किनारे-किनारे, वन में चले गए। वहां तीन दिन निराहार रह कर ईश उपासना और गायत्री जाप किया। जिससे कामवासना का कोई संस्कार घर न कर सके।

इसी तपस्या, साधना और ब्रह्मचर्य व्रत का परिणाम था, कि जब कलकत्ता की भरी सभा में अश्विनी कुमार ने स्वामी जी से पूछा, कि क्या कभी कामवासना का विचार आप के मन में आया है ? उस सत्यानुरागी, सत्यमानी, सत्यवादी, ने कुछ क्षण सोच कर बड़ी गम्भीरता के साथ कहा, सोचने पर भी मुझे कोई ऐसा समय स्मरण नहीं आता, जब कामवासना के संस्कार उद्बुध हुए हों। इस पर युवक ने पुनः पूछा, इस का क्या कारण है ? तब स्वामी जी ने उत्तर दिया, कि मेरा मन सदा अपने कार्य में व्यस्त रहता है, अतः इस को ऐसा अवसर ही नहीं मिलता। महर्षि के इन शुद्ध विचारों का ही प्रभाव था, कि आप को लेटते ही उसी क्षण गहरी नींद आ जाती थी।

विपरीत परिस्थिति-शिव जी के गले में सदा सांप लिपटे दिखाये जाते हैं। इसीलिए ही उनको सर्पभूषण, नीलकण्ठ, कण्ठेकाल (विषयानात्) शितिकण्ठ कहते हैं, कहा जाता है, कि समुद्रमन्थन से निकले विष को शिव जी ने ही पिया था। महर्षि दयानन्द के जीवन चरित में आता है कि उन को अनेकवार अनेक प्रकार का (पान, मिठाई, दूध आदि के माध्यम से) विष दिया गया और अन्त में मृत्यु भी संखिया विष के प्रभाव से ही हुई। पुनरपि स्वयं विष पीकर भी दुनिया को अमृत जैसा सत्यज्ञान दिया। तभी तो किसी कवि ने लिखा है-

अमृत सा क्या पिला दिया, जादू सा क्या चला दिया। और महर्षि ने विष देने वालों को भी सदा गले लगाया, प्रेम किया और जीवन तक का दान दिया।

उन दोनों पहलुओं को सामने रखकर राष्ट्रकवि रामधारी

सिंह दिन कर ने-

'नमन उन्हें मेरा शतवार' कविता में लिखा है-

'दुखी स्वयं जग का दुख ले कर,
स्वयं रिक्त सब को सुख दे कर।
जिन का दिया अमृत जग पीता,
कालकूट उन का आहार,
नमन उन्हें मेरा शतवार'
'विश्व को अमृत पिला विष
आचमन तुम ने किया है,
देशहित तय त्याग, संयम का चयन तुम ने किया है।
देह की समिधा बनाकर प्राण घृत की आहुति दे,
धन्य ऋषिवर धन्य जीवन का हवन तुम ने किया है।'

एक व्यक्ति प्रतिदिन प्रात:काल नित्य नियम से आप के आवास पर आकर गिन-गिन कर गाली देता था। परन्तु महर्षि सदा उस को मिष्ठान्न देते थे। इसी प्रकार अमृतसर में एक व्यक्ति के कहने पर प्रलोभन वश बच्चों ने ऋषि पर पत्थर बरसाये ऋषि ने भरी सभा में बच्चों को मिठाई दिलवाई और कहा-इन का कोई दोष नहीं, इन को तो किसी ने बहकाया है।

एक मुसलमान थानेदार महर्षि का भक्त था, जब उस को पता चला, कि अमुक व्यक्ति ने पान में विष दिया है, तो उस को पकड़कर बड़ी खुशी-खुशी श्री चरणों में उपस्थित हुआ। महर्षि ने यह देखकर कहा-मैं दुनिया को कैद कराने नहीं, छुड़वाने आया हूं।

एक बार एक मुसलमान युवक महर्षि के पास आया, वार्तालाप के पश्चात् महर्षि ने उस को पच्चीस वर्ष से पूर्व विवाह न कराने का परामर्श दिया। बहुत वर्षों के पश्चात वह फिर मिला और नमस्ते करने पर महर्षि ने उस का नाम पुकारा। बातचीत में उस ने महर्षि से पूछा, क्या बात है ? कि आप का शरीर पहले की अपेक्षा इतना अधिक शिथिल क्यों हो गया है ? महर्षि ने उस की बात सुनकर एक गहरी सांस लेकर गम्भीरता के साथ कहा, कि अपनों ने इस को अनेक बार विष दिया है।

इतने पर भी महर्षि के दिल में मानव जाति के प्रति अपार करूणा और दया भरी हुई थी। एक बार जब एक विधवा को अपने इकलौते पुत्र को गंगा में बहाने के बाद उस के कफन को धोकर लाती हुई देखा, तो महर्षि की आत्मा रो उठी, कि आज भारत इतना कंगाल हो गया है, कि उस के पास कफन के लिए भी वस्त्र नहीं है। शायद ऐसे मौके के लिए कहा है-

कांटा चुभे किसी को तड़पते हैं, हम से मीर।
सारे जहां का दर्द हमारे दिल में है।

एक दिन मेले में यजमानों द्वारा अपनी युवा बेटियां देवदासी के रूप में दान देते हुए देखा, तो ऋषि इतने बेचैन हुए कि सारी रात सो ना सके। तभी तो किसी कवि ने कहा है

इक टीस जिगर में उठती है,
इक दर्द सा दिल में होता है
हम रात को बैठ के रोते हैं,
जब सारा आलम सोता है॥

परमत्यागी-शिव जी के चित्रण में उन को भभूत रमाये हुए और मृगचर्म धारण किए दिखाया जाता है। तभी तो दिगम्बर शब्द से शिव जी को पुकारा जाता है। जिस का भाव है, कि वह परम त्यागी, तपस्वी, निर्लोभी और मान की इच्छा से दूर है। महर्षि दयानन्द के जीवन में पग-पग पर इन गुणों का समावेश मिलता है। तभी तो यह तपस्वी पौष मास की सर्दी में गंगा के किनारे कौपीन-अंगोछे में विचर रहा है। एक अंग्रेज ने भेंट में इस का कारण पौष्टिक पदार्थ खाना कहा, तो स्वामी जी ने मुख का उदाहरण देकर अभ्यास ही हेतु रूप में संकेतित किया। हां, ब्राह्म समाज के नेता श्री केशव चन्द्र सेन की प्रेरणा पर महर्षि ने 1872 के पश्चात् कलकत्ता प्रवास में पूर्ण वस्त्र धारण प्रारम्भ किए थे।

उदयपुर के राजा महर्षि के भक्त तथा सहयोगी थे। उन्होंने अति समृद्धिशाली एकलिंग मन्दिर की गद्दी सशर्त संभालने की प्रार्थना की, तो वीतरागी ने पूर्णत: इनकार कर दिया। जब राजा ने कहा, कि ऐसा दाता न मिलेगा, तब बड़े स्वाभिमान के साथ महर्षि ने उत्तर दिया-आप को भी ऐसा साधु न मिलेगा, जो अपने आप आई हुई सम्पत्ति को लात मार दे। गंगातीरमपि त्यजन्ति मलिनं ते राजहंसा वयम् मूर्तिपूजा की जब पुन: चर्चा चली, तो बड़े आत्म गौरव के साथ महर्षि ने घोषणा की, कि मैं सर्वव्यापक परमेश्वर की आज्ञा को मानूं या आप की। जिस की सीमा को मैं एक दौड़ में ही पार कर सकता हूं। इसी प्रकार के प्रलोभन के अवसर ओखी मठ, काशी नरेश की ओर से आए, पर उस बीतराग संन्यासी ने धन की ओर ताक कर भी न देखा।

एक बार बनारस में आधी रात के समय कुछ व्यक्तियों ने आकर महर्षि के द्वार को खटखटाया। महर्षि ने उठ कर द्वार खोला, तब उन व्यक्तियों ने प्रार्थना की, कि काशी की विद्वत परिषद ने श्रीचरणों में निवेदन किया है, कि यदि मूर्तिपूजा का खण्डन करना छोड़ दें, तो आप को दशम अवतार घोषित किया जा सकता है। उस परमहंस ने असत्य और वेद विरूद्ध होने से इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

इस प्रकार हम जितना भी महर्षि के जीवन पर विचार करते हैं, तो हर दृष्टि से शिव अलंकार वाली महापुरूष की कसौटी महर्षि के जीवन पर चरितार्थ होती है।

वस्तुत: महर्षि सच्चे अर्थों में कल्याणकारी (शिव) थे। जिन के सत्यज्ञान से लाखों के जीवन का कल्याण हुआ। अमीचन्द जैसे हजारों तर गए। अत: शिवरात्री की वह रात वास्तव में ही संसार के लिए कल्याण की रात सिद्ध हुई।

शिवरात्रि एक संदेश

-श्री सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय जालन्धर

जिसकी पवित्र वेद विद्या मंगला के आगे,
पापिनी अविद्या दुखद का मुख बन्द है,
ढोंगी मतवाले दर्पहीन किए, जानता जिसे न ऐसा कौन मतिमन्द है।
धर्म धारणा से सारे देशों का सुधार किया,
जिसका अमोघ उपदेश सुखकन्द था,
सूझी शिवरात्रि को सच्चे शिव की महत्ता जिसे
सत्य मूलशंकर वही तो दयानन्द है।

सम्वत १८९४ विक्रमी की शिवरात्रि पर टंकारा के एक छोटे से शिवालय में एक चूहे की उछल कूद दिशाओं को एक नया दिशाबोध दे एक नई क्रान्ति को जन्म दे गई। जिसके सम्बन्ध में कविवर सौमित्र ने कहा था-

एक मूषक ने जगाया उग्र ऊहापोह
जन्म के संग क्रान्ति लायी, सत्य का विद्रोह।

वस्तुत: यह घटना ऐसी थी कि जिससे समस्त दिशाओं ने एक तीव्रतर सुधारात्मक मोड़ लिया था और सत्य तो यह है कि इस घटना पर सुधार का जो भव्य भवन खड़ा किया गया उसी का नाम आर्य समाज है। जिसे एक धधकती आग का नाम दिया गया जो महर्षि के हृदय से प्रादुर्भूत हुई थी। यह आग महर्षि की तपस्या का मूल रूप है। मानो उनकी साधना मुखरित होकर कह रही हो-

जिंदगी को तपाए दे रहा हूं,
स्वर्ण को कुन्दन बनाए दे रहा हूं।
आंधियों को रोशनी मिलती रहेगी,
आज वो दीपक जलाए दे रहा हूं।

शिवरात्रि हमारे लिए सिर्फ एक पर्व नहीं है जिसे मनाया और फिर समाप्त। यह दूसरे मताबलम्बियों पर होगा जो मन्दिरों की कमाई पर निर्भर है। परन्तु शिवरात्रि आर्य समाज के लिए एक खास महत्त्व रखती है। हम इसे बोधरात्रि के नाम से मनाते हैं। वास्तव में यह हमारे लिए स्वयं को खोजने तथा पहचानने का एक अच्छा अवसर है।

शिवरात्रि आत्म निरीक्षण का एक अच्छा अवसर है। मैं सभी आर्य बन्धुओं से निवेदन करना चाहता हूं कि शिवरात्रि तो हर वर्ष आएगी पर वह समय जो बीत गया है, दुबारा न आ सकेगा। शिवरात्रि पर्व को आर्य समाज ऋषि बोध पर्व के रूप में मनाता हैं, क्योंकि इस दिन सन् १८३८ में शिव के परम भक्त कर्षन जी तिवारी के सुपुत्र मूल शंकर ने शिव पिण्डी की पूजा करते हुए चूहों को मूर्ति पर चढ़ा हुआ देखकर बोध प्राप्त किया था कि मन्दिर में विराजमान यह शिवपिण्डी जिसकी वह पूजा कर रहा है, वह सच्चा शिव नहीं है। इस बोध से ही यह पर्व बोध पर्व के नाम से सारे आर्य जगत् में प्रसिद्ध हो गया। शिवरात्रि के पर्व पर उस शिव मन्दिर में अन्य शिव भक्तों के समान वह भी सो सकता था और ब्रह्ममुहूर्त में उठकर अपने घर लौटकर माता-पिता के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त कर सकता था, किन्तु वह तो "**यो जागार: तम् ऋचा: कामयन्ते**" अर्थात् रात्रि भर जागकर उस शिव के दर्शन करना चाहता था, जो कल्याणकारी था, मंगलकारी था और उसी बालक मूलशंकर ने अपने को मूल से दयानन्द बना डाला-

मन के अन्तरिक्ष में हुई प्रबल झंकार,
मूलशंकर का जुड़ा परमात्मा से तार।

यदि मूलशंकर शिवरात्रि का व्रत न रखना तो न वह महर्षि दयानन्द बनते और न ही आर्य समाज की स्थापना होती। आर्य समाज रूपी संस्था को स्थापित करके महर्षि ने संसार के ऊपर बहुत बड़ा अहसान किया है। यदि वह आर्य समाज की स्थापना न करते तो संसार का स्वरूप कुछ और ही होता।

महापुरुष स्वयं जागृत होकर संसार को जगा जाते हैं। महर्षि दयानन्द ने भी स्वयं जागृति प्राप्त करके सारे संसार को जगा दिया है। महर्षि ने अपने जीवन का एक-एक क्षण मानव मात्र के कल्याण के लिए लगा दिया। ऋषि का पावन संदेश पाकर पता नहीं कितने भारत माता के सपूत व पुत्रियां सत्य मार्ग पर आ गए जो कभी पथभ्रष्ट या मार्गभ्रष्ट होकर वैदिक मान्यताओं से अलग हुए थे और कह उठे कि "धन्य है तुझको ऐ ऋषि तूने हमें जगा दिया।"

टंकारा वाले ऋषि की महिमा उनकी गौरव गाथा तो महासागर है। किसी ने ठीक ही कहा है-

सिसकता था सत्य जब पाखण्ड ने था देश घेरा,
आंधियों से जब अधर्मों का हुआ था घुप अंधेरा।
वेद का तब सूर्य लेकर ज्योति से जग जगमगाया,
मन मुकुट मल साफ कर मानव पुन: मानव बताया।

अत: यही कहा जा सकता है कि मूलशंकर ने शिवरात्रि पर सच्चे शिव की खोज का संकल्प लिया और महर्षि दयानन्द ने अपने ज्ञान से उसे साकार किया। आज की शिवरात्रि यही कहने आई है-

पूरे महिमण्डल के हित में आर्य समाज बचाना है,
वेदों का पथ जलती तल को हमको ही दिखलाना है,
दनुज वृतियां भूमण्डल की हमको सहज मिटाना है,
ऋषि दयानन्द के सपनों को अब साकार कराना है,
इसलिए उठ पड़ो आर्यों घड़ी नई यह आई है,
बढ़ो! आर्यों! पुन: तुम्मेंहें शिवरात्रि जगाने आई है।

महर्षि स्वामी दयानन्द

-संकलनकर्त्ता श्रीमती मृदुला अग्रवाल १६ जी. सरत बोस रोड कोलकत्ता

संसार में समय-समय पर जनता जनार्दन का उद्धार करने के लिये जितने भी महापुरुष अवतरित हुए हैं, उनमें से भगवान् बुद्ध-जैसे इने-गिने व्यक्तियों को छोड़कर, जनता ने कब उनके जीवन-काल में उनका सही मूल्यांकन किया है। इसके विपरीत ''मरते हैं जिसके इश्क में, उसको पता नहीं''-जिस जनता जनार्दन का उद्धार करने में उन्होंने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया, अपने जीवन की बलि दे दी, उन्हीं से पुरस्कार-स्वरूप उन्हें मिली गालियाँ और मिला अपमान, भर्त्सना, तिरस्कार एवं भाँति-भाँति की यातनाएं। बहुतों को तो अपने जीवन से भी हाथ धोना पड़ा। किंतु-

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु, युगांतरे वा
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

• [धीर पुरुष किसी भी परिस्थिति में अपने पथ से विचलित नहीं होते।] ऐसे ही महापुरुषों में थे हमारे चरित्रनायक स्वामी दयानन्द।

आज शिवरात्रि (फाल्गुन कृ० १३ का दिन है। शैवों का सबसे महान् पर्व। शैवों का ही क्यों ? आर्य-समाजियों का भी। कारण, आज की ही रात्रि में युवक मूलशंकर के हृदय में, सच्चे शिव की खोज की जिज्ञासा उत्पन्न हुई थी। एतदर्थ उन्होंने किशोरावस्था में ही अपने धनी मां-बाप का दुलार छोड़ा। युवावस्था के प्रारम्भ में ही विवाह की रंगीनियों का परित्याग किया। जंगल, बियाबान, नदी, पर्वत, दुर्गम घाटी, एवं हिमाच्छादित उतुगे शिखरों की खाक छानी, अनेक बार हिंसक पशुओं के आक्रमण से जीवन को संकट में डाला और दर-दर की ठोकरें खाते फिरे। ये सब किसलिये ? उस सच्चे गुरु की खोज में जो उन्हें सच्चे शिव का साक्षात्कार करा सके। ''जिन खोजा तिन पाइयाँ।'' मथुरा में स्वामी विरजानंद के रूप में उन्हें उस सच्चे गुरु की उपलब्धि हो गई। पारस पत्थर के स्पर्श से लोहा स्वर्ण में परिणत हो गया। उनके सम्पर्क में आकर मूलशंकर, दयानन्द हो गये और विदाई के समय गुरु दक्षिणा में अपने प्रज्ञाचक्षु गुरु को दुर्दशाग्रस्त भारत का पुनरुद्धार करने का वचन देकर वहाँ से विदा हुए।

हज़ारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदाःवर पैदा।

स्वामी दयानन्द भी इस युग के महत्तम सुधारक थे। दैवी ज्ञानागार वेदों के प्रकाण्ड पण्डित, परमात्मा की सत्ता में अटल विश्वासी, सत्यनिष्ठ, निर्भय, अखण्ड ब्रह्मचर्य के तप से तपापूत प्रबल ब्रह्मचारी, आर्य संस्कृति के महान् उपासक, लुप्तप्राय प्राचीन ऋषि-मुनियों की परम्परा के पुनः प्रस्थापक, व्यावहारिकता से कोसों दूर केवल सिद्धान्त मात्र पर आधारित नवीन वेदांतियों के कट्टर विरोधी, धर्म को व्यावहारिकता का परिधान पहनाने वाले, विदेशी साम्राज्यवाद के सर्वप्रथम विरोधी,

---

लेखक स्वर्गीय श्री शान्तिस्वरूप गुप्त का संक्षिप्त परिचय

मूल स्थान-गुरावड़ी (हरियाणा), जन्म-स्थान-गुड़गाँव (हरियाणा), जन्म-बैशाख-कृ.८ संवत् १९६८ (23 अप्रैल, सन्-१९११), पिता-श्री सुन्दरलाल गुप्त, मृत्यु-२६ फरवरी, सन् १९९५।

रूचि-धर्मशास्त्र, संत-साहित्य, कविता (हिन्दी, उर्दू, संस्कृत और अंग्रेजी), कामशास्त्र, वैद्यक, होमियोपैथी, यूनानी चिकित्सा, समाजसेवा, व्यायाम, भारतीय तथा विदेशी विभिन्न धर्मों का परिज्ञान।

श्री शान्तिस्वरूप गुप्त सुघड़ गृहस्थ, आकण्ठ व्यवसायी, गहन अध्ययनशील, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और उर्दू साहित्य के अध्येता एवं परम आस्तिक पुरूष थे। कलकत्ता आर्य समाज से भी काफी जुड़े हुए थे। अन्य-अन्य आर्य-समाजों में भी उनका काफी योगदान था। यह अत्यन्त श्रेय की बात है कि उन्होंने अपने व्यवसायिक जीवन की व्यस्तता में भी योगस्थ होकर वेद, स्मृति, उपनिषद्, आरण्यक, ब्राह्मणों के अनेक गूढ़ तत्वों का विवेचन करने के साथ-साथ अपनी दृष्टि से अनेक प्रचलित भ्रान्तियों, अंधविश्वासों और विचारों का निराकरण करने का भी सराहणीय प्रयास किया था। उन्होंने अत्यन्त दुरूह विषयों को भी अत्यन्त सरल और सुबोध भाषा में निस्सीम विद्वता के साथ प्रतिपादित किया है। आशा है पाठकों को आत्म-चिन्तन के लिये पर्याप्त प्रेरणाप्रद सशक्त सामग्री प्राप्त हो सकेगी।

अछूतों को सवर्णों के समान मानवीय अधिकार दिलाने वाले, विधवाओं के साथ होने वाले अमानुषिक अत्याचारों से उन्हें मुक्त कराकर पुनः समाज का उपयोगी अंग बनाने वाले, ''स्त्री-शूद्रौ नाधीयेताम्''-सिद्धांत के सिर पर सर्वप्रथम कुठाराघात करने वाले, वेदों को पढ़ने का मनुष्यमात्र को मौलिक अधिकार है सिद्धांत के सम्पोषक, गुरुकुलीय शिक्षाप्रणाली के पुनरुद्धारक, सहशिक्षा के कट्टर विरोधी, स्वयं गुजराती होते हुए भी हिंदी को राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाने के सर्वप्रथम उद्घोषक, बाल विवाह-वृद्ध विवाह के दुष्परिणामों से जनता को अवगत कराकर युवावस्था में ही स्त्री पुरुष विवाह कर सुंदर संतान उत्पन्न कर सकते हैं इस वैदिक सिद्धांत के समर्थक, पाश्चात्य दार्शनिकता ''खाओ, पीओ, मौज उड़ाओ'' सिद्धांत की नींव खोखली कर सच्ची दार्शनिकता का मार्ग प्रशस्त करने वाले, प्रचलित विश्वास जन्मना जाति की पोल खोलकर 'जन्मना जायते शूद्रः'-जन्म से सब शूद्र उत्पन्न होकर पुनः गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार जाति प्राप्त करते हैं सिद्धांत के प्रचारक, शंकरादि आचार्यों के अमानुषिक मिथ्या सिद्धांत कि शूद्रों को वेद पढ़ने की तो बात ही क्या, अगर कान में ध्वनि पड़ जावे तो तप्त सीसा कान में डलवा दिया जावे के गढ़ को समूल नष्ट कर स्वयं निम्नलिखित वेद मंत्र से प्रमाणित करने वाले कि वेदों का पठन-पाठन प्रत्येक मनुष्य का स्वाभाविक जन्म-सिद्ध अधिकार हैं-

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च॥

-यजु० २६।२

[(यथा) जैसे (इमाम्) इस (वाचम्) चारों वेदरूपी (कल्याणी) कल्याणकारिणी वाणी का (आवदानि) उपदेश करता हूँ (जनेभ्यः) मनुष्य मात्र के लिये, (शूद्राय) शूद्रों के लिये (च) और (आर्याय) आर्यों के लिये (स्वाय) अन्तर्जन्माओं के लिये, (आचरणाय) भ्रमणशील जातियों के लिये।]

उन्होंने ही बताया कि इस गृहस्थ-रूपी रथ के स्त्री पुरुष दो चक्र हैं जो सर्वथा समान स्तर पर ही सुचारु रूप से गति कर सकते हैं। वहां ऊँच, नीच एवं विशेषाधिकार का कोई प्रश्न ही नहीं है। एक ईश्वर, एक वेदानुकूल धर्म, एक भाषा एवं एक संस्कृति का पालन कर भारतवर्ष अपने लुप्तप्राय गौरव को पुनः प्राप्त करने में सक्षम हो सकेगा एवं पुनं दावा कर सकेगा-

''स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः।''

अपने इन्हीं सुनहले स्वप्नों को साकार करने में जीवन भर उन्होंने संघर्ष किया। संन्यासी होते हुए भी उन्होंने समाधिगत ब्रह्म प्राप्ति के दिव्य आनन्द के प्रलोभन का परित्याग किया। घर-बार, माता, पिता, बंधु, बांधव, सगे-संबंधी सबसे मुँह मोड़कर जंगल बियाबान की खाक छानी, सब भौतिक सुखों का परित्याग कर जीवन भर संघर्षरत रहकर कभी चैन की साँस नहीं ली। यह सब किसलिये ? एक मात्र लुप्तप्राय ईश्वर-प्रदत्त वैदिक ज्ञान को भारतवर्ष तक ही सीमित नहीं वरन् ''कृण्वंतो विश्वमार्यम्'' का घर-घर प्रचार करने हेतु। इस प्रकार वे जीवन भर संघर्षरत रहे, शिवजी की भाँति बारंबार स्वयं गरल पान कर जनता जनार्दन को वेदों के अमृत से प्लावित कर संसार को प्रकाश का मार्ग दिखलाकर स्वयं सदा के लिये महाज्योति में विलीन हो गये।

तत्ववेत्ता और विचारकों के देश भारतवर्ष के महान् जातीय पर्व 'दीपावली' के दिन जब सारे भारतवासी, क्या धनी, क्या निर्धन, क्या स्त्री क्या पुरुष, क्या बालक क्या वृद्ध, क्या गाँव क्या नगर, सभी जगह के नर-नारी समचेत होकर दीप जला-जला कर उल्लसित हो रहे थे, ठीक उसी समय भारत माँ का लाड़ला सुपुत्र दयानन्द अपने आत्मा को पञ्चतत्त्व से पृथक् कर इस दुःख-भरे अकृतज्ञ संसार का परित्याग कर अमृतत्त्व की ओर प्रयाण कर रहा था।

सामान्यतः सारी वसुधा और विशेष रूप से अज्ञानान्धकारावृत भारतवर्ष को बलात् प्रकाश की ओर ले जाने वाले महान् गुरु, वेदों के प्रकाण्ड पंडित, परमात्मा की सत्ता में अटल विश्वासी, सत्यनिष्ठ, अखण्ड ब्रह्मचारी, आर्य संस्कृति के महान् उपासक, केवल धर्म मात्र को सिद्धान्त मानकर उसे जीवन में व्यावहारिकता का रूप देने वाले, विदेशी, विजातीय एवम् विधर्मी शासन के विरुद्ध सर्व प्रथम आवाज़ बुलन्द करने वाले, अछूतों को मानवता के समान अधिकार दिलाने के पक्षपाती, विधवाओं के साथ होने वाले अमानुषिक अत्याचारों के विरुद्ध उद्घोष कर उनके साथ मानवोचित व्यवहार के सम्पोषक, कर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था के प्रचारक, हिन्दुओं के प्रचलित विश्वास स्त्रीशूद्रौ नाधीयेताम् के प्रबल विरोधी, स्त्री पुरुषों के समानाधिकार के उद्घोषक, मनुष्यादि द्विपद के ही नहीं, गौ आदि चतुष्पाद प्राणियों के हितार्थ भारतवर्ष में सर्वप्रथम गोशाला के संस्थापक, जिनका आत्मा परमात्मा के दिव्य तेज से युक्त, वाणी मोहिनी शक्ति से ओत-प्रोत, ब्रह्मचर्य के दैवी तेज से देदीप्यमान उस महान् तपस्वी स्वामी दयानन्द के लिये दीवाली बन गई निर्वाण तिथि।

'परोपकाराय सतां विभूतयः' वाली उक्ति को अपने जीवन में शत प्रतिशत क्रियान्वित कर उन्होंने लोगों को तद्वत् जीवन यापन करने का मार्ग प्रशस्त किया। अधिक तो क्या, मानव-जीवन का कोई भी वैयक्तिक या सामाजिक ऐसा पहलू शेष नहीं रहा जिसका उन्होंने पथ-प्रदर्शन न किया हो। **(शेष पृष्ठ 22 पर)**

युग प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द

-डा० एच. कुमार कौल डायरैक्टर-गाँधी आर्य सी. सै. स्कूल, बरनाला

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

गीता में योगीराज भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा कथित उक्त श्लोक सदैव महापुरुषों के जीवन पर चरितार्थ हुआ है। महाभारत काल तक वैदिक धर्म अपनी निर्बाध गति से भारत व भारत से बाहर प्रचलित रहा। परन्तु इसके बाद शनैः शनै। एक अन्धकार का ऐसा युग आया कि ज्ञान-विज्ञान धीरे-धीरे लुप्त होने लगा। भारत की सामाजिक आर्थिक ही नहीं, अपितु आध्यात्मिक दशा भी अत्यन्त शोचनीय हो गई थी। अधर्म और अज्ञान की काली निशा में भारतीय सो रहे थे। साधारण सी भूलों पर सन्देह मात्र पर ही लोगों को जातिच्युत कर दिया जाता था। आर्य जाति का बहुत बड़ा भाग धर्मग्रन्थों को पढ़ना तो दूर, उनको सुनने का भी अधिकारी नहीं माना जाता था। नारी जाति वेद पढ़ने के अधिकार से वंचित थी। रीतिरिवाज, वर्जनाएँ और भी अनेक बन्दिशें नारियों की रुचियों, स्वप्नों, जीवन जीने के विकल्पों और वरण के अधिकारों को कुचल रही थी। बालविवाह हो रहे थे। नारियों को पढ़ने का अधिकार नहीं था। उन्हें घर की चार दिवारी में कैद कर दिया गया था। दहेज प्रथा अपने पांव पसार चुकी थी। देश अंधविश्वासों में जकड़ा हुआ था। स्त्री और दलित वर्ग को स्वतन्त्र वातावरण में श्वास लेने का अधिकार नहीं था। वेद-कर्मकाण्डी साहित्य के बेहिसाब बोझ के तले दब गये थे।

परन्तु इस धरती पर जब-जब धर्म पर ख़तरा मंडराता है। तब-2 भगवान अवतरित हो भटकती मानवता और धर्म को अपना संरक्षण देकर उनकी रक्षा करते हैं। 19वीं. सदी में जब देश न केवल पराधीन था, बल्कि यहाँ की सभ्यता, संस्कृति और धर्म नाश के कंगार पर था। ऐसे समय में युग प्रवर्त्तक, दिव्य आत्मा स्वामी दयानन्द अवतरित हुए। उन्होंने पौराणिक काल के अंधे युग की अज्ञानपूर्ण परम्पराओं पर कठोर कुठाराघात किया। वैदिक संस्कृति पर आधारित जीवन की स्थापना कर भारतीयों को अपनी प्राचीन परम्परा से अवगत करवाया।

इस युग प्रवर्त्तक ने बताया कि परमात्मा एक है, तथा वह कण-कण में विराजमान है। हमें उसकी उपस्थिति इसलिए प्रतीत नहीं होती क्योंकि हम अपने भीतर आत्मा रूपी आँख पैदा नहीं कर पाते। महर्षि दयानन्द जी की विशेषता यह भी है। कि उन्होंने केवल परलोक को ही संवारने की बात नहीं की बल्कि उन्होंने इह लोक को भी संवारने पर जोर दिया है। उन्होंने बार-बार अपने ग्रन्थों और प्रवचनों में व्यक्ति को पूर्णता प्राप्त करने के लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि प्राप्त करने की बात कही है। इसलिए हमें उनके चिन्तन में बहु-आयामी बोध के दर्शन होते हैं। उनके अनुसार एकता का आधार वेद है। उनके अनुसार धर्म के तीन सकन्ध हैं-यज्ञ, अध्ययन और दान। उनके अनुसार धर्म और अधर्म अनेक हैं किन्तु उन्होंने मुख्यत! ग्यारह धर्म सनातन उपदिष्ट बताये हैं-

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः॥

अर्थात् अहिंसा धृति (धैर्य), क्षमा, दम (मन की वृत्तियों का निग्रह करना, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, (इन्द्रियों को वश में रखना।) धी (बुद्धि), विद्या, सत्य, अक्रोध। उन्होंने सुपात्रों को दान देना। गोहत्या निषेध, केवल अपनी उन्नति में ही सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना। उन्होंने केवल धार्मिक उन्नति पर ही नही, सामाजिक और राजनैतिक उन्नति पर भी विशेष ध्यान दिया। उन्होंने देश में सामाजिक क्रान्ति लाने का उद्घोष किया। महर्षि दयानन्द जी ने देखा कि निष्क्रिय और निस्तेज हो चुके भारतीय समाज में मुख्यतः तीन बाधाएँ हैं-अभाव-अज्ञान और अन्याय। इसे गरीबी-अशिक्षा और दासमनोवृत्ति भी कह सकते हैं। इस महान युगप्रवर्त्तक का मानना था कि प्रचलित रूढ़ियों कुरीतियों व अन्य अन्धविश्वासों के रहते समाज को स्थिरता प्रदान नहीं की जा सकती।

स्वामी जी से पूर्व हमारे विद्वानों ने नारी जाति के विषय में कहा-स्वामी शंकराचार्य ने कहा कि द्वारं किमेकं नरकस्य ? नारी।

नरक का द्वार क्या है ? नारी। तो तुलसीदास ने लिखा-

ढोल गंवार शूद्र पशु नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी॥

कबीरदास जी ने कहा-छोटी मोटी कामिनी, सब ही विष

की बेल। ये थी हमारे विद्वानों की श्रद्धाजलि-मातृशक्ति के प्रति।

ऋषि ने नारी को पैर की जूती के स्थान पर सिर की पगड़ी के तुल्य बताया। उन्होंने स्त्रियों को पुरुषों के समानाधिकार दिए। सती प्रथा, दहेज प्रथा, बाल विवाह का डटकर विरोध किया। वहीं स्त्रियों के पुनर्विवाह का समर्थन किया।

शूद्रों की दशा स्त्रियों से भी खराब थी। उनकी अलग बस्तियां बनायी जाती थी यहां तक यदि किसी हरिजन के साथ वस्त्र भी लग जाता तो उच्च जाति के लोग उसे उसी समय धोने लग जाते। उन्हें कुएँ तालाब, नल से पानी लेने का अधिकार तो दूर की बात है। छोटी-छोटी गलतियों पर बड़ी-बड़ी सजाएँ दी जाती थी इस आपसी फूट का अंग्रेज सरकार बहुत लाभ उठा रही थी ऐसे प्रताड़ित लोगों को मुसलमान या ईसाई बनाया जा रहा था। श्री शंकराचार्य जी ने इस सम्बन्ध में लिखा है-

''शुद्रस्य वेदमुपशृण्वतस्त्रपुजतुभ्यां श्रोत्रपरिपूर्णामिति।
वेदोच्चारणे जिह्वाच्छेदों, धारणे शरीर भेदः इति॥''

अर्थात् शुद्र वेद शब्द सुन ले, तो उसे कान को सीसे और लाख से भर देना चाहिए। उच्चारण करने पर जिह्वा काट देनी चाहिए और स्मरण करने पर शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डालने चाहिए।

एक बार एक शूद्र ने स्वामी जी को भोजन पर आमान्त्रित किया। ऋषि ने प्रेमपूर्वक आतिथ्य ग्रहण किया तो लोगों ने आक्षेप किया कि ''महाराज! आप तो शूद्र का भोजन खाकर भ्रष्ट हो गये।'' स्वामी जी ने कहा रोटी तो अन्न की थी यदि वह पाप की कमाई की होती तब निषिद्ध होती।'' स्वामी जी ने शूद्रों के लिए वेदों को पढ़ने का अधिकार दिलाया। इस क्षेत्र में स्वामी जी के कार्यों को देखकर सारा संसार दंग रह गया। ये आर्यसमाज के प्रचार का ही परिणाम है कि अब निम्न कहे जाने वाले, शूद्र कहे जाने वाले गुरुकुल के स्नातक, शास्त्री तथा उच्च-उच्च पदों पर कार्यरत हैं।

स्वामी जी चाहते तो वे भी वैभवपूर्ण जीवन जी सकते थे परन्तु वे भारत की दशा को देखकर विचलित हो गए। उन्होंने धर्म के निरर्थक कर्मकाण्डों के नाम पर चलाई गई कुरीतियों, अन्धविश्वासों, जड़ पूजाओं, गलत मान्यताओं का घोर विरोध किया। उन्होंने वस्तुत: जब कभी हिन्दू, मुसलमान या इसाई धर्म का खण्डन किया है तो वस्तुतः उन्होंने असत्य, अन्धविश्वास और जड़ मान्यताओं का विरोध किया है उन्होंने बार-बार घोषित किया कि सभी धर्मो के मूल में शुद्ध मानव धर्म के तत्व विद्यमान है। उन्होंने हिन्दू धर्म में फैले अन्धविश्वास को देखकर कुम्भ के मेले के अवसर पर हरिद्वार में 'पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहारायी' उन्होंने उपदेश दिया कि हर की पौड़ी पर नहाने से कुछ नहीं बनता अच्छे धर्म से, वेद की शिक्षा पर चलो। यही पुण्य है, यही तीर्थ है, उन्होंने यज्ञों में होने वाली हिंसा का डटकर विरोध किया ऋषि ने ऐसे लोगों को ललकारा और कहा-कि ये कुकृत्य कभी भी धर्म नहीं हो सकता कि वेद तो गाय, कुत्ता, कौआ, चीटीं आदि को भी भोजन दिये बिना न खाने का उपदेश देता है। गौ रक्षार्थ उन्होंने करोड़ों लोगों के हस्ताक्षर करता कर अंग्रेज सरकार को भेजे।

स्वामी जी ने मृतक, श्राद्ध का भी खण्डन किया। स्वामी जी ने आठ बेड़ियों-घृणा, शंका, भय, लज्जा, निन्दा, कुलीनता, शील, अभिमान को जीत लिया। उन्होंने नाना स्थानों पर भ्रमण किया तथा योगतत्वों को जानकर ये अनुभव किया कि जब तक इन तत्वों का अभ्यास न किया जाये तब तक अभीष्ट फल प्राप्त नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि स्वस्थ शरीर के बिना हम कोई भी अभीष्ट फल प्राप्त नहीं कर सकते।

महर्षि दयानन्द के रग-रग और रोम-रोम में देशभक्ति कूट-कूट भरी थी। उन्होंने देश की परतन्त्रता के कारण गरीबी और आत्महीनता की अवस्था को देखकर ''स्वराज्य'' शब्द राष्ट्र को दिया। वे राष्ट्र पिता, युगप्रवर्त्तक थे उन्होंने देश को स्वतन्त्र करवाने के लिए पहले-पहले वहीं आर्य समाज की स्थापना की, जहाँ अंग्रेजों ने छावनियां बना रखीं थी ताकि मिल्ट्री में 'स्वदेश प्रेम' की भावना जगाकर विद्रोह करवाया जा सके। राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से शुद्धि आन्दोलन को जन्म दिया ताकि बिखरे, बिछड़े और पिछड़े लोग सब मिलकर एक सूत्र में पिरोये जा सके। भारतीयों को स्वदेश स्वराज और स्वदेशी और स्वभाषा का उत्कृष्ट मन्त्र स्वामी दयानन्द ने दिया। उनका कहना था कि किसी भी देश का विकास सभ्यता और संस्कृति, भाषा के विकास पर निर्भर हैं। स्वयं गुजराती होते हुए भी उन्होंने हिन्दी के विकास पर जोर दिया।

वास्तव में उन्होंने लोगों के भीतर एक नयी उमंग, जोश, साहस और सामूहिक देशभक्ति के भावों का सृजन किया। सतीप्रथा, बालविवाह, छूआछूत क्षेत्रवाद आदि समस्याओं को दूर करके उन्होंने विधवा विवाह तथा पद्दलित नारी को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया अन्धविश्वांस कुरीतियों और रूढ़ियों से भारतीयों को निकालने का प्रयास किया। गुणों के ही क्या, स्वामी जी महापुरुषों के जीवनों के सब उत्कृष्ट अंश स्वामी जी के जीवन

में उपलब्ध थे। इस विषय में स्वामी सत्यानन्द जी ने खूब लिखा है–''महाराज के उच्चतम जीवन की घटनाओं का पाठ करते समय ऐसा प्रतीत होता है कि आज जितने भी महात्मा हुए है उनके जीवनों के सभी समुज्ज्वल अंश दयानन्द में पाये जाते हैं। घोरतम तपस्या करना और अन्त में मृत्युंजय महौषध का ब्रह्मसमाधि में लीन कर लेना बुद्धदेव के समान दिखाई देता है। दीन दुखियों, अपाहिजों, अनाथों को देखकर क्राइस्ट बन जाते हैं। एक ईश्वर का प्रचार करते हुए, विस्तृत भ्रातृभाव की शिक्षा देते मोहम्मद जी, आर्यत्व की रक्षा के लिए वे शिवाजी और गुरूगोविन्द जी का रूप धारण कर लेते हैं त्याग वैराग्य, श्रद्धा, भक्ति अपार पाई जाती है, तर्क अथाह हैं। प्रेम और उपकार का पुञ्ज है ओज, तेज, लोकहित और परम प्रताप है।''

वास्तव में वे युग प्रवर्त्तक हैं, दीप्तिस्तम्भ है जो भूले भटके मानवों को कुमार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। हमें ऋषि के गुणों को अपने जीवन में धारण करते हुए सच्चे मानव बनने का प्रयत्न करें। यहीं युगप्रवर्त्तक, को सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी। एक कवि ने उनके विषय में ठीक ही कहा है कि–

गुलिस्ताँ में जाकर हर इक गुल को देखा।
न तेरी सी रेगत, न तेरी सी बू है॥

आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर में बोधोत्सव

आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्म उत्सव व बोधोत्सव पर्व एवं वेदकथा सप्ताह का आयोजन 4 मार्च से 10 मार्च 2013 तक मनाया जा रहा है। 4, 5, 6 मार्च को 5.00 बजे से 6.00 बजे तक प्रभात फेरियां निकाली जाएंगी। 4 मार्च से 9 मार्च 2013 तक वेद कथा सुबह 7.30 बजे से 10.00 बजे तक होगा जिसमें भजन पंडित संदीप आर्य जी भजन मंडली द्वारा और विशेष प्रवचन आचार्य श्री महावीर मुमुक्षु जी के होंगे। 10 मार्च 2013 को मुख्य उत्सव होगा जिसमें 8.30 बजे से 10.00 बजे तक विश्व शांति महायज्ञ होगा जिसमें ब्रह्मा श्री पंडित विजय कुमार जी शास्त्री होंगे। ध्वजारोहण श्री अविनाश घई जी यूनीक ग्रुप करेंगे और ध्वजगीत गुरूकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों द्वारा गाया जायेगा। धर्म रक्षा सम्मेलन 10.30 बजे से दोपहर 2.00 बजे तक स्वामी सदानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में होगा। सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि वह इस अवसर का लाभ उठाएं।

–सुदेश कुमार मंत्री आर्य समाज

पृष्ठ 19 का शेष- स्वामी दयानन्द.....

''तैंने खूबी कौन सी छोड़ी ज़माने के लिये।''

आर्यसमाज के दस नियमों में जिन उदार भावनाओं का दिग्दर्शन है वैसा संसार के किसी भी धर्म में मिलना संभव नहीं। उदाहरणार्थ सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना क्या किसी अन्य धर्म ने सिखाया है ?

स्वामी जी से पूर्व समय-समय पर अनेक महापुरुषों का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने अपने ढंग से अपने युग में जनता का पथ-प्रदर्शन किया। लेकिन समस्त भूमण्डल के मनुष्य मात्र की उन्नति का मार्ग सर्वप्रथम इन्होंने ही प्रशस्त किया। ईसा, मूसा, मुहम्मद, जरथुस्त आदि अनेक धर्मों के प्रवर्त्तक एवं हिन्दुओं के भी भिन्न-भिन्न मतों के आचार्यों में से कौन स्वामीजी की भाँति स्त्री-पुरुषों के समान अधिकार का उद्घोष कर सका। स्त्री-शूद्र ही नहीं, अपितु संसार के प्रत्येक मनुष्य को ईश्वरीय ज्ञान वेदों के पढ़ने का समान अधिकार है यह तो सर्वप्रथम उसी महापुरुष की देन है।

राज्य विदेशी विजातीय विधर्मी न होकर स्वदेशी स्वजातीय एवं स्वधर्मियों का ही होना चाहिये, इसका नारा सबसे पहले भारतवर्ष में इन्होंने ही बुलन्द किया था।

एक ईश्वर, एक धर्म, एक भाषा एवं एक संस्कृति के सिद्धांत को प्रस्थापित कर आर्यावर्त्त को पुनः उन्नति के उच्चतम शिखर पर आरूढ कराकर भूमण्डल में सुख शान्ति स्थापित करने का उन्होंने पाठ पढ़ाया, अपने इन्हीं सुनहले स्वप्नों का साक्षात् करने के लिये जीवन भर संघर्ष किया, अपमान सहे, ईट-पत्थरों की वर्षा सहन की, लाठी-तलवारों के आघात बरदाश्त किये, बारम्बार गरलपान किया, यह सब किसलिये ? एक मात्र लुप्तप्राय ईश्वर-प्रदत्त वेदों के ज्ञान का पुनः भारतवर्ष में प्रचार करने के हेतु।

शम्मा की तरह जले, बज्मगहे आलम में।
खुद जले दीदये अगयार को बीना करने।

जनता को वेदामृत पिलाने के हेतु स्वयं गरल पानकर दीपावली की अमावस्या की अधेरी रात में संसार को प्रकाशमय कर स्वयं सदा के लिये अदृश्य में विलीन हो गए। वे चले गए और आज हम उसके उत्तराधिकारी कुम्भकर्णी निद्रा में निमग्न हैं। अपने अधूरे काम को पूरा करने का ऋण हम पर छोड़कर वे जहाँ से आए थे उसी प्रभु की गोद में वापस चले गए। इत्योम्।

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले।
धरम पर मरने वालों का यही बाकी निशाँ होगा।

॥ ओ३म् ॥

नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

सारे संसार का कल्याण करने वाले उस परमपिता परमात्मा को बार–बार नमस्कार।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

दोआबा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, नवांशहर

(स्थापित– 1911)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) गुरुदत्त भवन,
किशनपुरा चौक, जालन्धर द्वारा संचालित
अपने गौरवमय इतिहास को पुनर्जीवित
करने के लिये दृढ़ संकल्पिक
निरन्तर प्रगति की
ओर अग्रसर

विशेष आकर्षण

सुन्दर, विशाल भवन, भव्य पुस्तकालय, अत्याधुनिक कम्प्यूटर शिक्षा, शानदार परीक्षा परिणाम, अनुभवी तथा योग्य अध्यापक, नैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक शिक्षा, विशाल क्रीड़ा क्षेत्र, खेलों की आधुनिक प्रयोगशालाएं, समस्त भव्य सुविधाओं से परिपूर्ण

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये तुरन्त सम्पर्क करें।

सुरेन्द्र मोहन तेजपाल	ललित मोहन पाठक	ललित कुमार	राजेन्द्र सिंह गिल
प्रधान	उप प्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् इन्द्रायेन्द्रो परिस्त्रव।

ऋग्वेद 7,113,7

मेरा मन ज्योतिर्मान प्रभु की ओर प्रवाहित हो तथा परमानन्द की प्राप्ति करें।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोधदिवस के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज नवांशहर दोआबा

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. उच्च स्तर की पढ़ाई।
2. मेहनती व अनुभवी स्टाफ।
3. शिक्षा के क्षेत्र में उच्च स्थान।
4. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
5. शिक्षा में देशभक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।

❖❖❖❖❖❖

नये सत्र में अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

डा.सी.एम.भंडारी	विनोद् भारद्वाज	मीनाक्षी शर्मा
प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापति।

मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥ (यजुर्वेद 32/5)

हे सर्वोत्कृष्टेश्वर! आप आनन्दस्वरूप और आनन्ददाता हैं, विज्ञानमय और विज्ञानप्रद हैं, सब संसार के अधिष्ठाता और पालन ऐश्वर्य दाता हैं, परमपवित्र और अनन्त बलवान हैं, सब के धारण पोषण करने वाले हैं, कृपा करके हम को ऐसी बुद्धि दें कि जिससे हम सर्वविद्या सम्पन्न हों, यह हमारी बारम्बार प्रार्थना है।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर. के. आर्य कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख–रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

शिवरात्रि के शुभ अवसर पर, प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य, प्राध्यापकगण, प्रिंसीपल और विद्यार्थी सभी आर्य बन्धुओं व बहिनों को हार्दिक बधाई भेंट करते हैं।।

☆☆☆☆

नवांशहर के क्षेत्र में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र। खेलों का समुचित प्रबन्ध व खुले मैदान, धार्मिक, नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान, चरित्र निर्माण पर विशेष बल।

☆☆☆☆

नये सत्र में अपने बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिये, उनके चरित्र निर्माण के लिये, धार्मिक व नैतिक शिक्षा के लिये और उज्ज्वल भविष्य के लिये उन्हें ***आर.के. आर्य कालेज नवांशहर*** में प्रवेश करवायें।

देशबन्धु भल्ला एडवोकेट	**सोहन सिंह**	**जे.के.दत्त**	**एस.के. बारिया**
प्रधान	उप प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोधदिवस के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.ए.एन.आर्ट एंड क्राफ्ट (A.C.T) कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में

निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. नवांशहर क्षेत्र में आर्ट्स एंड क्राफ्ट का एक मात्र कालेज
2. अनुभवी तथा ट्रेंड स्टाफ।
3. सुसज्जित मैदान।
4. शानदार पेटिंग सिखाने का प्रबन्ध।
5. सभी प्रकार की आधुनिक विद्याओं से युक्त।
6. बोर्डिंग का उचित प्रबन्ध
7. शत्-प्रतिशत् परीक्षा परिणाम।

नये सत्र में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की ओर विशेष ध्यान

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

विनोद कुमार	बख्तावर सिंह	विपिन तनेजा	आशा शर्मा
प्रधान	उप प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

नाप्राप्यमभिवांछन्ति नष्टं नेच्छन्ति शोचितुम्।
आपत्सु च न मुहयन्ति नरा: पण्डित बुद्धय्॥

जो मनुष्य प्राप्त होने के अयोग्य पदार्थों की कभी इच्छा नहीं करते अदृश्य व किसी पदार्थ के नष्ट भ्रष्ट हो जाने पर शोक करने की अभिलाषा नहीं करते और बड़े–बड़े दु:खों से मुक्त व्यवहारों की प्राप्ति में भी मूढ़ होकर नहीं घबराते, वे मनुष्य पंडितों की बुद्धि से युक्त कहाते हैं। (व्यवहारभानु)

– महर्षि दयानन्द

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डब्ल्यू.एल. आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल नवांशहर

☆☆☆

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

☆☆☆

1. *अनुभवी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।*
2. *नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल।*
3. *अच्छे परीक्षा परिणाम, सुन्दर भवन, हवादार कमरे।*
4. *आधुनिक विशेषताओं से युक्त पाठ्यक्रम में देश भक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।*

नये सत्र में अपनी कन्याओं के उज्ज्वल भविष्य और आदर्श शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र सरीन	राजेन्द्र कुमार प्रेमी	ललित कुमार	कान्ता सिंह
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ओ३म् ॥

न वा उदेवा: क्षुधमिद् वधं ददु:, उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यव:।
उतो रयि: पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारं न विदन्ते॥ (ऋ. 10/117/1/11)

देवों ने न केवल भूख दी भूख के रूप में मौत दी है, अपितु खाते पीते अमीर को भी नाना प्रकार से मौत आती है और देने वाले की धन-सम्पत्ति क्षीण कभी नहीं होती अपितु जो दान न देने वाला है, वह कभी भी किसी सुख को प्राप्त नहीं करता अपितु दान देने वाला सुख को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व शिवरात्रि पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै.स्कूल नवांशहर

विशेषताएं

☆☆☆

1. शिशुशाला से +2 तक नियमित कक्षाएं और सुयोग्य एवं प्रशिक्षित स्टाफ।
2. धार्मिक शिक्षा।
3. कम्प्यूटर शिक्षा।
4. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से पाठ्यक्रम का पठन-पाठन।
5. विशाल क्रीडा क्षेत्र।
6. सुन्दर भवन।
7. हरे-भरे वृक्ष।
8. उचित जल एवं विद्युत व्यवस्था।
9. हवादार कमरे आदि विशेषताओं से सम्पन्न है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की छत्रछाया में उन्नति के पथ पर अग्रसर

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

इन्द्रदेव गौतम	जिया लाल शर्मा	अंचला भल्ला	सतीश कश्यप
प्रधान	प्रबन्धक	डायरैक्टर	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तंमीडत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृंजसानम्

ऊर्जः पुत्रं भरतं सुप्रदातुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम ॥ (ऋ. 1/7/3/3)

जो परमात्मा सब जगत् का आदिकारण, वेदविहित कर्मों से प्राप्त होने योग्य, सबका अधिष्ठाता तथा पूजनीय है और जिसको विद्वान लोग प्रकाश तथा नम्रता का देने वाला, जगत् का दुःख हर्ता, धारण पोषणकर्त्ता, ज्ञान तथा क्रिया शक्ति आदि उत्तम पदार्थों का देने वाला मानते हैं, उसी की सब को स्तुति करनी चाहिये, अन्य की नहीं। (आर्याभिविनय)

- महर्षि दयानन्द

◆◆◆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

◆◆◆

हार्दिक शुभकामनाएं

◆◆◆

डी.ए.एन कालेज आफ एजुकेशन फार गर्ल्ज, नवांशहर

❑ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❑

विशिष्टताएं

सुयोग्य प्राचार्य व प्राध्यापकगण, बृहद पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधियां, नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर बल, कम्प्यूटर और होस्टल सुविधाएं उपलब्ध व समस्त आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण। नये सत्र के लिये अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

◆◆◆

विनोद कुमार भारद्वाज	एस.के.बरूटा	डा. सरोज भल्ला
प्रधान	सचिव	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

राष्ट्र च रोह द्रविणं व चरोह (अथर्व. 13/1/34)

सुख के लिये राज्य और धन को बढाओ।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य कालेज लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित।
2. अनुभवी व उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
3. हवादार कमरे, खेलने के लिये खुला मैदान।
4. लड़के, लड़कियों के लिये पढ़ाई की अलग अलग व्यवस्था।
5. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
7. सभी तरह की विशेषताओं से युक्त पुस्तकालय व प्रयोगशाला।

नये सत्र में अपने बच्चों का उज्जवल भविष्य बनाने के लिये इस कालेज में प्रवेश करवायें।

सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

डा.रमेश चन्द्र तेजपाल
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।

दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥20॥

भावार्थ- हे प्रभो ! तेरा दिव्य शक्ति वाला जो मन जागते हुये का व सोते हुये का दूर दूर तक जाता है अर्थात् चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान-साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. समृद्ध स्वामी दयानन्द पुस्तकालय।
2. अनुभवी, लग्नशील, मेहनती, सुयोग्य, ट्रेंड स्टाफ
3. स्कूल में पानी की उत्तम व्यवस्था के लिये प्रबन्ध।
4. अच्छे परीक्षा परिणाम तथा गत वर्ष की अपेक्षा विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि।
5. प्रति वर्ष विद्यार्थियों की भलाई व कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का निर्णय।
6. आर्थिक अनियमितताओं को दूर करने के लिये प्रयासरत
7. प्राइमरी विंग के बच्चों के लिये खेलने की विशेष सुविधा।
8. खेलों के क्षेत्र में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के विशेष प्रबन्ध।
9. विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिये स्कूल में धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

आशानन्द आर्य	**रमेश जोशी**	**विनोद गांधी**	**विजयपाल**
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

इन्द्रो विश्वस्य राजति।

शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥

भावार्थ- हे प्रभु! जो प्रदीप्त सूर्य संसार को प्रकाश दे रहा है, वह सब दोपायों के लिये और चौपायों के लिये सुख का देने वाला हो।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य गर्ल्ज सीनियर सै.स्कूल लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विद्यालय के विशेष आकर्षण

1. उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
2. बढ़िया बोर्ड परीक्षा परिणाम।
3. सांस्कृतिक गतिविधियां।
4. समृद्ध पुस्तकालय।
5. गरीब एवं योग्य छात्राओं को छात्रवृत्तियां।
6. कन्याओं की उच्च शिक्षा का प्रबन्ध
7. कॉमर्स ग्रुप व कम्प्यूटर प्रशिक्षण के लिये विशेष प्रबन्ध।

नये सत्र में अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य व सर्वांगीण विकास के लिये सम्पर्क करें।

सुशील मोदगिल	जयप्रकाश	राजेश शर्मा	रवि महाजन	ज्योति किरण शर्मा
प्रधान	उपप्रधान	प्रबन्धक	उपप्रधान	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।

शमभिशाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवा शं नो अप्याः॥

भावार्थ- हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले साधारण जन, विविध प्रकार के देने वाले दाता जन एवं द्युलोक, पृथिवी लोक और अंतरिक्ष लोक से सम्बन्ध दैवी शक्तियां हमारे लिये कल्याणकारी हों।

★★★

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

दयानन्द पब्लिक स्कूल

दीपक सिनेमा रोड, लुधियाना

(पंजाब शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त)

प्री-नर्सरी से दसवीं कक्षा तक इंगलिश/ हिन्दी मीडियम, पंजाब पढ़ाने का उत्तम प्रबन्ध

विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
2. आर्ट्स,क्राफ्ट एवं कम्प्यूटर का समुचित प्रबन्ध।
3. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
4. शीतल पेय जल के लिये वाटर कूलर का प्रबन्ध।
5. विशाल एवं हवादार कमरे।
6. शहर के मध्य में स्थित।
7. बढ़िया फर्नीचर।
8. खुला मैदान।
9. शानदार परीक्षा परिणाम।

नये सत्र में प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

संत कुमार	आशानन्द आर्य	सुनीता मलिक
प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

विद्या:- जिससे ईश्वर से लेके पृथिवी पर्यन्त पदार्थों का सत्य-विज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है, इसका नाम 'विद्या' है। (महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के शुभावसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

मालवा का शान्ति निकेतन

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

+1 और +2 के साथ-साथ बी.ए. तृतीय वर्ष तक पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला से सम्बन्धित संस्था

1. Post Graduate Diploma in Computer Application.

2. Post Graduate Diploma in Dress Designing & Tailoring (both affiliated to Punjabi University Patiala) कोर्स भी चल रहे है। इस कालेज में पंजाबी, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, इक्नामिक्स, राजनीति शास्त्र, इतिहास, संगीत, फिलास्फी विषयों के साथ-साथ कम्प्यूटर, आफिस मैनेजमेंट, होम मैनेजमेंट, फाईन आर्ट्स के विषय भी पढ़ाये जा रहे हैं। पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला का केवल यह एक कालेज है जहां फैशन डिजाइनिंग का विषय भी पढ़ाया जाता है।

यू.जी.सी. स्कीम अधीन कई अन्य विषय/ कोर्स शुरू किये गए हैं।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

★★★

डा.सूर्यकांत शोरी	**भारत भूषण मैनन एडवोकेट**	**केवल जिन्दल**	**डा.नीलम शर्मा**
प्रधान	महासचिव	उपप्रधान	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तीर्थ:- जितने विद्याभ्यास, ईश्वरोपासना, धर्मानुष्ठान , सत्य का संग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियादि उत्तम कर्म हैं, वे सब 'तीर्थ' कहाते हैं क्योंकि इन करके जीवन दुखसागर से तर जा सकते हैं। (महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य माडल स्कूल, बरनाला

विश्व गुरु स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के पद्‌चिन्हों पर चल कर अपना मानव जीवन सफल बनायें तथा राष्ट्र को सही दिशा दें।

विशेषताएं

1. योग्य, परिश्रमी और अनुभवी अध्यापक वर्ग।
2. प्रबन्धक समिति के शिक्षित और दूरदर्शी सदस्यों द्वारा पूर्ण सहयोग।
3. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान।
4. खेलों के साथ साथ सह पाठ्यक्रम क्रियाओं के प्रति विशेष ध्यान।
5. शिक्षण विकास की परीक्षा हेतु समयानुसार परीक्षाएं।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें आर्य माडल स्कूल बरनाला में दाखिल करवायें। सम्पर्क करें

हरमेल सिंह जोशी
प्रधान

भारत भूषण मेनन
मैनेजर

राजेश कुमार गांधी
सैक्रेटरी

उर्मिल सिंगला
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के
पावन पर्व पर

☆☆☆

गांधी आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल बरनाला

☆☆☆

की ओर से सभी को हार्दिक शुभ कामनाएं।

स्कूल की मुख्य विशेषताएं :-

- सभी कक्षाओं के शत–प्रतिशत परिणाम।
- उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
- खुले तथा हवादार कमरे।
- वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
- अन्य सह–क्रियाओं में छात्रों का रचनात्मक सहयोग।
- अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा।
- खेलों का उचित प्रबन्ध।
- बिजली पानी का उचित प्रबन्ध। नये सत्र में बच्चों के दाखिला के लिये सम्पर्क करें।

प्रेम कुमार बांसल एडवोकेट
प्रधान

भारत भूषण मैनन एडवोकेट
वरिष्ठ उप प्रधान

संजीव शोरी
मैनेजर

भारत मोदी
सचिव

डा. एच.कुमार कौल
डायरैक्टर

॥ ओ३म् ॥

मुक्ति के साधनः- अर्थात् ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का करना तथा धर्म का आचरण, पुण्य का करना, सत्संग, तीर्थ सेवन, विश्वास, सत्पुरुषों का संग, परोपकारादि सब अच्छे कामों का करना और सब दुष्ट कर्मो से अलग रहना है, ये सब 'मुक्ति के साधन' कहाते हैं। महर्षि दयानन्द

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, बरनाला (संगरूर)

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर हार्दिक बधाई

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

1. आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के मार्ग दर्शन में संगरूर जिले में अग्रणी शिक्षा संस्था।
2. समय पालन, सामाजिक सहयोग, देश प्रेम, पारस्परिक सद्भाव तथा विश्वास, उत्तरदायित्व की भावना, अनुशासन तथा धर्म और संस्कृति के प्रति आदर का पाठ्यक्रम में समावेश।
3. कम्प्यूटर शिक्षा, संगीत शिक्षा, क्रीड़ा प्रतियोगिताएं, शैक्षणिक भ्रमण, समृद्ध प्रयोगशाला, समृद्ध पुस्तकालय, खुले हवादार कमरे, वाटर कूलर, जैनरेटर की सुविधा।

☆☆☆

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

☆☆☆

भारत भूषण मैनन	भारत मोदी	पवन सिंगला	संजीव शोरी	बसंत शोरी	दर्शना कौर
प्रधान	उपप्रधान	उप प्रधान	सैक्रेटरी	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, शृंणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, अदीनाः स्याम शरदः शतं,भूयश्च शरदः शतात् ॥9॥

भावार्थः हे प्रभो आप सबके मार्ग दर्शक हैं, विद्वानों के परम हितकारक हैं, आप तेजोमयी शक्ति हैं- हम सौ वर्ष तक आपको ज्ञान चक्षुओं से देखते रहें, सौ वर्ष तक आपके उपदेश को सुनते रहें, और दूसरों को सुनाते रहें, सौ वर्ष तक तथा इससे भी अधिक समय तक आपकी कृपा से हम स्वस्थ जीवन बिताएं और जन्म जन्मांतर तक आपका यश देखते सुनते रहें।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा

बालिकाओं का उज्जवल भविष्य बनाने वाली एक श्रेष्ठ संस्था

इसके मुख्य आकर्षण हैं:-

1. नगर के मध्य में स्थित
2. खुले हवादार कमरे।
3. कक्षा प्रथम (पहली) से +2 (आर्टस व कॉमर्स) तथा मैडीकल, नॉन मैडीकल तक शिक्षा में प्रति वर्ष शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
4. बच्चों को नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय शिक्षा देकर दृढ़ चरित्र-निर्माण व देशभक्त बनाने का प्रयास।
5. जरूरतमंद बच्चों के लिये पुस्तक व कोष व अन्य तरीकों से आर्थिक सहायता।
6. अनुशासन पर विशेष ध्यान।
7. विभिन्न उपायों से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर सतत जोर देना।
8. आधुनिक लैब, साईंस ग्रुप +1, +2 के लिये उपलब्ध।

इस प्रकार अनुभवी प्रबन्धक समिति, सुयोग्य प्रधानाचार्य व प्रशिक्षित स्टाफ के समुचित नेतृत्व व मार्ग दर्शन में दिन-प्रतिदिन उन्नति के सोपानों को पार करता हुआ यह विद्यालय आपके बच्चों का स्वर्णिम भविष्य निर्मित करने के लिये नगरवासियों की सेवा में प्रस्तुत।

"नये सत्र में अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलाएं, उन्हें योग्य, चरित्रवान व देशभक्त बनाएं।"

कुलवन्त राय अग्रवाल	**निहाल चंद एडवोकेट**	**सरला गुप्ता**
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

विश्वे यजत्रा अधिवोचतोतये, त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्, रूतः।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम, शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये।

हे श्रेष्ठ पुरुषो। आप हमें दुखों से बचाने के लिये अधिकारपूर्वक उत्तम उपदेश सुनाओ। हे विद्वानों हम दुःख प्रगति में जब पड़ें तब आप दुखियों की सच्ची टेर सुनने वाले हमारे दुख सुन कर हमारा त्राण करो। अपनी रक्षा और कल्याण के लिये हम दुखी जन आपको पुकारते हैं।

❖

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस और बोध पर्व के अवसर पर
आर्य बन्धुओं व मातृ शक्ति को
हार्दिक शुभ कामनाएं

❖

आर्य समाज, बाजार श्रद्धानन्द, अमृतसर

❖❖❖❖❖❖❖

धार्मिक व सामाजिक कार्यों में आर्य समाज को अपना सहयोग दें, साप्ताहिक आर्य मर्यादा पढ़ें, आर्य मर्यादा के सदस्य बनें। यह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर का प्रमुख साप्ताहिक पत्र है।

दैनिक व साप्ताहिक सत्संगों में भाग लेकर पुण्य के भागी बनें।

ओम प्रकाश भाटिया	**सुरेश महाजन**	**शशि कोमल**
प्रधान	वरिष्ठ उप प्रधान	महामन्त्री
पुरुषोत्तम शर्मा	**पी.के.त्रिपाठी**	**ऋचा सचदेवा**
उप प्रधान	**प्रचार मंत्री**	**कोषाध्यक्ष**

॥ ओ३म् ॥

पुरुषार्थ:-अर्थात् सर्वथा आलस्य छोड़ के उत्तम व्यवहारों की सिद्धि के लिये मन, शरीर, वाणी और धन से जो अत्यन्त उद्योग करना है, उसनको 'पुरुषार्थ' कहते हैं। (महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖❖❖

आर्य सीनियर सैकैण्डरी स्कूल धूरी

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये नैतिक व उच्च शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

सोमप्रकाश आर्य	वीरेन्द्र कुमार आर्य	बी.एल.कालिया
प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

कर्म :- जो मन, इन्द्रिय और शरीर से जीव चेष्टा विशेष करता है सो 'कर्म' कहाता है। वह शुभ, अशुभ और मिश्रभेद से तीन प्रकार का है। (महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

यश चौधरी आर्य माडल स्कूल, धूरी

अपने बच्चों के चरित्र निर्माण के लिये, उन्हें चरित्रवान व देशभक्त बनाने के लिये उनके स्वर्णिम भविष्य के लिये, नैतिक व धार्मिक शिक्षा के लिये उन्हें यश चौधरी आर्य माडल स्कूल धूरी में प्रवेश करवाये।

म. सोम प्रकाश आर्य	सतीश पाल आर्य	आर.पी.तलाड़
प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

मोबाइल: 98148-99527

॥ ओ३म् ॥

परलोक:- जिस में सत्य विद्या करके परमेश्वर की प्राप्ति पूर्वक इस जन्म व पुनर्जन्म और मोक्ष में पर सुख प्राप्त होना है, उसको 'परलोक' कहते हैं। (महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोधपर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य कालेज धूरी

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

नैतिक व उच्चशिक्षा के लिये सम्पर्क करें

जसवीर रत्न एडवोकेट — प्रधान

प्रह्लाद कुमार आर्य — सैक्रेटरी

कृष्णा सिंगला — प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

आर्यावर्त्त देश :- जो अग्निहोत्र से लेके अश्वमेध पर्यन्त जो शिल्प व्यवहार और जो पदार्थ विज्ञान हैं, जोकि जगत के उपकार के लिये किया जाता है, उसको 'यज्ञ' कहते हैं। (महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य समाज धूरी एवं स्त्री आर्य समाज धूरी

दूरभाष: 01675-221247

धार्मिक व सामाजिक कार्यों में आर्य समाज को अपना सहयोग दें।

दैनिक व साप्ताहित सत्संगों में भाग लेकर पुण्य के भागी बनें।

म. सोमप्रकाश आर्य — *प्रधान*

मोबाइल नं. 98148-99527

अशोक जिन्दल — *महामन्त्री*

रामपाल आर्य — *मन्त्री*

पवन गर्ग — *कोषाध्यक्ष*

उर्मिला आर्या — *प्रधाना*

कृष्णा आर्या — *मन्त्राणी*

शिमला देवी — *कोषाध्यक्ष*

॥ ओ३म ॥

सत्पुरुषः सत्यप्रिय,धर्मात्मा, विद्वान, सब के हितकारी और महाशय होते हैं, वे 'सत्पुरुष' कहाते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य माडल हाई स्कूल, बठिंडा

विशेषताएं:

1. नगर के मध्य स्थित।
2. योग्य, सुशिक्षित तथा अनुभवी स्टाफ।
3. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष ध्यान।
4. शानदार परीक्षा परिणाम
5. नगर में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर
6. बिजली, पानी आदि मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था
7. नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

☆☆☆

पी.डी गोयल
प्रधान

वेद प्रकाश
वरिष्ठ उप-प्रधान

जगदीश राय बांसल
मन्त्री

नवनीत कुमार
कोषाध्यक्ष

विपिन कुमार गर्ग
प्रधानाचार्य

॥ ओ३म् ॥

जीव का रहस्य:- जो चेतन, अल्पज्ञ, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुख और ज्ञान-गुण वाला तथा नित्य है, वह 'जीव' कहाता है। (महर्षि दयानन्द)

ऋषि जन्म दिवस व बोध दिवस के पर्व पर सभी आर्य बन्धुओं और बहनों को स्कूल की प्रबन्धक समिति, प्रधानाचार्या एवं समस्त अध्यापकगण की ओर से

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य संस्कृति की गरिमा को समर्पित संस्था

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल एवं वैदिक कन्या पाठशाला

औहरी चौक, बटाला

संस्था के विशेष आकर्षण

1. छात्राओं के सर्वांगीण विकास का जाना-माना शिक्षा संस्थान।
2. धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध।
3. योग्य उच्चतम शिक्षा प्राप्त निष्ठावान तथा अनुभवी अध्यापक।
4. कम्प्यूटर लैब का उचित प्रबन्ध।
5. पुस्तकालय की सुविधा।
6. साफ-सुथरे उच्चस्तरीय कमरे।
7. गर्ल्ज गाईड तथा बैंड व्यवस्था।
8. सांस्कृतिक आधार।
9. बिजली के पंखे तथा शीतल पेयजल का प्रबन्ध।
10. शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
11. नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

निरन्तर प्रगति की ओर नारी उत्थान में संलग्न संस्था

प्रविन्द्र चौधरी	**विजय अग्रवाल**	**सोनिया सच्चर**
प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

पुरुषार्थ:- अर्थात् सर्वथा आलस्य छोड़ के उत्तम व्यवहारों की सिद्धि के लिये मन, शरीर, वाणी और धन से जो जो अत्यन्त उद्योग करना है, उसनको 'पुरुषार्थ' कहते हैं। (महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला

(Affiliated to P.S.E.B)

प्रमुख विशेषताएं

1. शत प्रतिशत बोर्ड परिणाम।
2. सुयोग्य और अनुभवी स्टाफ।
3. शिक्षा का आधुनिक ढंग।
4. हिन्दी, अंग्रेजी व पंजाबी माध्यम।
5. उच्च शिक्षा, कम शुल्क।
6. प्राकृतिक वातावरण।
7. खुले व हवादार कमरे।
8. बड़ा खेल का मैदान।
9. नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष ध्यान।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

डा. वीरेन्द्र कौशिक	अश्विनी मेहता	महेश चन्द्र भल्ला
प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

अविद्याः- जो विद्या से विपरीत है, भ्रम, अंधकार और अज्ञानरूप है, इसलिये इसको 'अविद्या' कहते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व शिवरात्रि पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पटियाला

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

संस्था के विशेष आकर्षण

1. पंजाब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त।
2. नगर के मध्य में स्थित
3. 10+2 तक की शिक्षा (आर्ट्स व कामर्स ग्रुप) तदर्थ नये भवन के ब्लाक का विशेष प्रबन्ध।
4. पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं हवादार कमरों वाली इमारत।
5. बिजली,पानी आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।
6. राष्ट्र प्रेम, धर्म व संस्कृति का आदर, भाइचारे की भावनाओं का विकास कर भारतीयता पर आधारित चरित्र निर्माण पर विशेष बल
7. आर्य समाज के दस नियम, गायत्री मंत्र, नैतिक व धार्मिक शिक्षा की परीक्षाओं की विशेष व्यवस्था।
8. कम्प्यूटर, संगीत व गृह-विज्ञान की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल के अति उत्तम शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
10. रैडक्रास, होम नर्सिंग, गर्ल गाईड की शिक्षा देकर विद्यार्थियों में सहायता का भाव उत्पन्न करना।
11. प्रधानाचार्य अनुभवी प्रतिभावान, सुशिक्षित व नगर में प्रतिष्ठित सुचारू प्रबन्ध कमेटी के योग्य निर्देशन में

अपने उच्च शिक्षित पूर्णतया योग्य अनुभवी स्टाफ के साथ मिल कर सफलतापूर्वक पाठशाला का संचालन कर रही है।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

सोमप्रकाश	**दर्शन कुमार**	**किरण जिन्दल**
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

परिमाग्ने दुश्चरिताद्बाधस्व मा सुचरिते भज।

यजु. 4/28

हे प्रकाशमय प्रभो ! मुझे दुराचार से रोको और सच्चरित्र में प्रेरो

***

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के शुभ अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

आर्य कन्या सी.सै.स्कूल, बस्ती नौ, जालन्धर

***

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति कीओर अग्रसर

विशेषताएं

विशाल भवन, हवादार कमरे, उच्च शिक्षित व शिक्षा को समर्पित स्टाफ, कन्याओं के विकास के लिये निरन्तरकार्यरत, नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।

***

नए सत्र में अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और आदर्श व उच्च शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ज्योति शर्मा
प्रधान

सुधीर शर्मा
प्रबन्धक

मीनू कपूर
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् अस्माकमिन्द्रः स्मृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्तु जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माकं उ देवा अवता हवेषु॥

(साम. अध्याय 22, खंड 4, मंत्र 2)

भावार्थः वीरों के बल से विजयी हम, फहरावें जय कीर्ति ललाम। देव हमारे धरती तल पर, प्राण पसारे जय वरदान। अमर शहीदों के पथ पर चल कर शान्ति का करें, प्रसार, शक्ति हमें दो भगवन ऐसी, वेद धर्म का हो विस्तार।

❖❖❖

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के शुभ अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां,जालन्धर

❖❖❖

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. विशाल भवन।
2. खेल के मैदान।
3. हवादार कमरे।
4. शिक्षा को समर्पित अध्यापक वृन्द।
5. अहर्निश छात्र वर्ग के विकास के लिये कार्यरत।

अपने लड़के व लड़कियों को धार्मिक शिक्षा दिलवाने के लिये
शिक्षा शास्त्री बनाने के लिये,सर्वांगीण विकास के लिये
तथा उनका उज्जवल भविष्य बनाने के लिये
आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बस्ती गुजां
जालन्धर में प्रथम श्रेणी से 10+2
तक की पढ़ाई के लिये
प्रवेश करवाएं।

सरदारी लाल आर्य
प्रधान

विशाल पुरुथी
मैनेजर

सतीश कुमार शर्मा
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

नवजागरण के पुरोधा, सबकी उन्नति में अपनी उन्नति के मंत्रदाता,
चेतन प्रभु की उपासना के प्रेरक, स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।

के उद्घोषक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक समग्र क्रान्ति के अग्रदूत, अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के रचियता, आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती जी

के पावन जन्म दिवस फाल्गुण दशमी 2069 विक्रमी एवं ऋषि दयानन्द बोधोत्सव फाल्गुण चतुर्दशी 2069 तदनुसार 7 मार्च एवं 10 मार्च 2013 ईस्वी की सम्पूर्ण आर्य जगत को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई। यह पर्व आर्य नर-नारियों में नई स्फूर्ति, उत्साह और प्रेरणा देने वाला हो ताकि हम सभी मिल कर ऋषिवर देव दयानन्द जी के मिशन का प्रचार और प्रसार करने में अग्रसर हों।

:-शुभाकांक्षी-:

मालती अग्रवाल
प्रधान
98886-30266

महेन्द्रप्रताप आर्य
मंत्री
98149-29268

श्यामदत्त जोशी
कोषाध्यक्ष
99883-07665

एवं सभी अधिकारी और सदस्यगण

आर्य समाज मंदिर (रजि.)

फेस-1, फोकल प्वायंट, जमालपुर, लुधियाना- 141010

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट,
रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताजगी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

आर्य समाज नवांशहर के वार्षिक उत्सव पर ध्वजारोहण करते हुये श्री प्रेम भारद्वाज जी। उनके साथ खड़े श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, जिया लाल शर्मा, श्री कुलवन्त राय शर्मा, श्री विनोद भारद्वाज, श्री शादी लाल महेन्द्रु प्रधान आर्य समाज बंगा दिखाई दे रहे हैं।

आर्य समाज के वार्षिक उत्सव के अवसर पर ऋषि लंगर का आनन्द लेती हुई आर्य जनता।

आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द के अतुल्य बल का प्रमाण

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।